हिंदी–गुजराती–शिक्षा

[भाग १]

संगच्छध्वम् संवदध्वम् सवो मनांसि जानताम्

(श्रुति)

श्रीराम रामप्रसाद शर्मा

हिंदी-गुजराती-शिक्षा

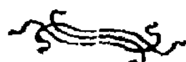
[भाग १]



कर्त्ताः—श्रीराम रामप्रसाद शर्मा

[बड़ोदा के मेलट्रेनिंग कॉलेज, फीमेल ट्रेनिंग कॉलेज,
वर्नाक्युलर कॉलेज के भूतपूर्व हिंदीशिक्षक
तथ
'सयाजीचरितामृत' 'पतितपावन' 'बालोद्यान-
पद्धति का गृहशिक्षण' आदि पुस्तकों के लेखक]

प्रकाशकः—'भगवद्दत्तबंधु मंडली' बदायूँ.



पहली बार { संवत् १९७८ फाल्गुन / सन् १९२२, फेब्रुवरी } क़ीमत ०—९—०

पुस्तकें मिलने का पताः—

प्रबंधक 'भगवद्दत्तबंधु मंडली' बदायूँ, सिटी

BUDAUN CITY

R K Ry

Printed by Mukundbhai Treekamlal Patel at
[illegible]yaprakash Press Tankshal—AHMEDABAD

22—2—22

विषयक्रम

सम्मतियां

હિંદી ભાષા તેના શુદ્ધ સ્વરૂપમાં વગર ગુરુએ શીખવાને આરંભમાં આ સારું પુસ્તક છે. એમાં હિંદી ભાષાના કેટલાક અક્ષરોના ઉચ્ચાર જે ગુજરાતી કરતાં ભિન્ન છે, તે પણ સમજાવ્યા છે, અને પછી માર્ગોપદેશિકાની પેઠે—**પણ આરંભમાં વ્યાકરણની કડાકૂટમાં નાખ્યા વિના**—ક્રમસર સહેલાં અને ટુંકા વાક્યોથી આરંભ કરી છેવટે નિબંધ કે વાર્તાની પ્રબંધરૂપ વાક્યશૈલી સુધી શીખનારને આણી મૂક્યા છે. વ્યવહારમાં વપરાતા શબ્દોનો પ્રાયઃ એમાં ઉપયોગ કર્યો છે એ પણ સારું કર્યું છે. ગુજરાતી-ભાષાશૈલીથી હિંદીભાષાની જ્યાં જૂદી પડે છે, ત્યાં ખાસ સમજૂત અને ઉદાહરણો આપ્યાં છે. એકંદર આ જાતનું આવું ઉત્તમ પુસ્તક મારા જોવામાં આ પ્રથમ જ આવે છે અને તેથી તેના કર્તા [illegible] ધન્યવાદ આપું છું. [illegible] આ જ પુસ્તક [illegible] (પ્રાન્તિક) ભાષાઓમાં હોય તો શીખનાર [illegible] ભાષાઓમાં [illegible] હિંદીનો સારો પરિચય મળશે [illegible]

વડોદરા
તા. [illegible]

છોટાલાલ નરભેરામ ભટ્ટ
([illegible] ના માજી તંત્રી)

તમારો પ્રયાસ [illegible] જે [illegible] ગુજરાત બંધુઓની માતૃભાષા રાષ્ટ્રભાષાને સહેજ મળતી આવે છે પણ ભાષાનું સામ્ય [illegible] દશાની [illegible] એવી રીતે તમારું પુસ્તક તૈયાર થયું છે, તે સારું છે. પાઠશાળાને ધોરણે વાચનનો અભ્યાસક્રમ રચી તેને હિન્દીની વાક્યરચના વિષે સારી સમજ તમારા પુસ્તકથી મળી શકે તેમ છે. જેમ ગુજરાતનો વતની એની મદદથી હિન્દી શીખી શકે તેમ ઉત્તર-હિન્દુસ્તાનનો વતની ગુજરાતી પણ શીખી શકે એમ હું માનું છું. તમારી ચોપડીનો ઉપયોગ રાષ્ટ્રીય અને અન્ય શાળાઓમાં થશે તો હિન્દીનો પ્રચાર સહેલાઈથી થઈ શકશે.

વડોદરા
વસંતપંચમી સં० ૧૯૭૮

નન્દનાથ દીક્ષિત
(એજ્યુકેશનલ ચીફ ઇન્સ્પેક્ટર—વડોદરા)

પણ્ડિત શ્રીરામ શર્માએ હિંદી-ગુજરાતી-શિક્ષા એ નામનું નાનકડું ઉમદા પુસ્તક લખ્યું છે જે સમયે રાષ્ટ્રીય શાળાઓમાં હિંદીની શિક્ષા ફરજયાત કરવામાં આવી છે તે સમયે આ પુસ્તક ઘણું ઉપયોગી નીવડશે પુસ્તકની રચના ઘણી સરલ છે અને નાનાં બાળકો પણ સમજી શકે એવી છે ભાષાનું અને વ્યાકરણનું જ્ઞાન સહેલાઇથી થઇ શકે એવી ગોઠવણ કરેલી છે રાષ્ટ્રીય શાળાઓની આરંભિક શ્રેણીઓમાં વાપરવા માટે આ પુસ્તક ઘણું યોગ્ય છે

માહ સુદ ૨, સં ૧૯૭૮ } **જેઠાલાલ ચીમનલાલ સ્વામીનારાયણ**

અમદાવાદ } (ગણિતમંદિરના આચાર્ય-ગુજરાત વિદ્યાપીઠ)

આ **शिक्षा** લખનારની જન્મભાષા હિંદી છે અને તેમણે ગુજરાતમાં હિંદી ભણાવવાનું કામ ઘણાં વરસો થયાં ઉત્સાહપૂર્વક કર્યું છે અને તેથી તેમને બન્ને ભાષાઓનો ભેદ બરાબર અવગત થયો છે આવા લખનારની **शिक्षा** ઉપયોગી થાય તેમાં નવાઇ શું? ચોપડી પદ્ધતિસર લખેલી છે એમાં હિંદી શિક્ષક તો હોય જ પ્રૌઢ વિદ્યાર્થીઓ દરેક એનો લાભ લઇ શકે છે શાળાપુસ્તક તરીકે પણ આ ચોપડી ચાલી શકે યોગ્ય માણસે યોગ્ય વખતે આ ચોપડી લખેલી છે એમ હું માનું છું

दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर

(સાબરમતી સત્યાગ્રહાશ્રમ-રાષ્ટ્રીય વિદ્યામંદિરના આચાર્ય)

'हिंदी गुजराती शिक्षा' के कुछ अंशों को पढकर मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूं कि पुस्तक बडी योग्यतापूर्वक लिखी गई है और अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगी। निस्सन्देह ऐसी पुस्तक की बडी आवश्यकता थी हिन्दी जाननेवाले इससे गुजराती भी सीख सकते हैं। गुजरात महाविद्यालय के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को इस से बडी सहायता मिलेगी।

१६-२-२२ } **बनारसीदास चतुर्वेदी**

अहमदाबाद } **(हिंदी अध्यापक गुजरात महाविद्यालय)**

सुनिये !

हिंदी-बहुत फैली+ हुई होनेसे स्वभावसे-ही सहली है, उस पर भी नपुसक लिंग न होने के कारण प्रकतिहाई मिहनत कम हो जाती है, फिर इस भाग मे हिंदी-गुजराती (सगी बहिनों) के नाते का मेल भी कुछ दिखलाया है, भाषा होती तो व्याकरण में पिरोई हुई ही है तौभी इस भाग में व्याकरण के ख्याल से पाठ नहीं लगाये बहुत लोग व्याकरण बिना जाने भी भाषा जानते होते है इस पुस्तक को ज्यादहतर कुछ व्याकरण जानने वाले ही काम में लायेंगे, वे इसमे व्याकरण साफ ढूढ लेंगे, जो व्याकरण से अभी दूर रहना चाहते है वे तरजुमे से सहज मे भाषा सीख सकेंगे तो भी व्याकरण के ढग के पाठो को दूसरे भाग में जगह दी है भाषा सीखनेका बढिया ढग तो वही है जिस से आदमी मातृभाषा सीखता है, उस सुयाग के हाथ न आने पर ऐसी किताबें अच्छा काम देती है यह भी कह दू कि हिंदी के वाचन (रीडिंग) के लिये अंग्रेजी की जितनी कोशिश मैं जरूरी नही समझता, गुजराती या मरहटी चौथी पुस्तक पढने वाला अंग्रेजी जितनी छ, सात वर्षों में बाँच पाता है

+ हिंदुस्तानकी ३२ करोड आबादी मे हिंदी बोलने वाले साढे तेरह करोड है, इन मे हिंदी समझ सकने वाले-पर बोल न सकनेवाले-मिला देने पर आधोआध-१६ करोड,-हिंदीवाले होते है बंगला के पौनेपांच करोड, मरहटी के दो करोड गुजराती के लगभग सवाकरोड होते है और अंग्रेजी के कितने ? तीन लाख

उतनी यह हिंदी तो छ, सात हफ़्तों में ही ऐसी हालतों में इस भागमें हिंदी-गुजराती के आपस के संबध को ही असल मतलब माना है हाँ, पढ़ने पढ़ाने वाले शुद्धि का ख्याल रखते हुए थोडे अमुक समय बेखटके बोलचाल का नियम जरूर रक्खे

पुस्तक पर पहले ही-शुद्धिपत्रक सहित शुरूसे आखिर तक-नजर डाल जाने से सुभीता रहेगा शिक्षक महाशयों की थोडी भी मदद विद्यार्थियों को काफी होगी विद्यार्थी किस तरह की* भूलें किया करते हैं, इस बात पर जरा ध्यान देते रहना चाहिये इस ओर मेरा यह पहला ही कदम है यह हो सकता है कि कहीं पर कोई कमी रह गई हो, ऐसी हालत मे जो विद्वज्जन सुधार की तरफ मेरा ध्यान खींचेंगे, मैं उनके अनुग्रह का पात्र होऊंगा



निवेदक
श्रीराम शर्मा

---

* 'को' का 'कु', 'से' का 'स', 'में' का 'म', 'हैं' का 'है' न होने पावे संबध की वस्तु पुलिंग-एक-हो तो, 'का' (उसका), अनेक हो तो, 'के', स्त्रीलिंग एक-अनेक हो तो, की, होता है, यह स्पष्ट समझ लेवें इसी तरह, एक हो तो, 'लड़का', अनेक हों तो, लड़के, संबोधन एक हो तो लड़के !, अनेक हों तो लड़को !, आगे प्रत्यय आने पर एक हो तो, लड़केने, अनेक हों तो, लड़कोंने, इत्यादि खास ध्यान में रखना चाहिये ये नियम प्रायः गुजराती के से ही हैं



अथ

हिंदी-गुजराती-शिक्षा.

भाग १.

स्वर.

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
અ	આ	ઇ	ઈ	ઉ	ઊ
ऋ	ऌ	ए	ऐ	ओ	औ
ઋ	०	એ	ઐ	ઓ	ઔ

अं	अः
અ	અઃ

क्रमहीन स्वर.

ऋ	ऐ	अ	ओ	औ	इ	ए
आ	ऊ	ॡ	उ	अं	ई	अः

वधारे मळता आवता स्वरूपना स्वर.

इ = ઇ, ई = ઈ, उ = ઉ, ઊ = ऊ

ओछा मळता आवता स्वरूपना स्वर.

अ	आ	ए	ऐ
અ	આ	એ	ઐ
ओ	औ	अं.	अः
ઓ	ઔ	અં	અઃ

स्वरना उच्चारण

सामान्य रीते हिंदी, गुजराती अक्षरो सरखी रीते ज उच्चाराय छे. बंगालीना जेवो मोटो फेरफार नथी

आ

अंग्रेजीना केटलाक शब्दोना उच्चार माटे 'आ' उपर अर्ध चंद्रनी निशानी मूकी आ अने 'ओ' ना अधवचनो उच्चार ठरावेलो छे

जेम —ऑगस्ट, ऑनरेबल, ऑफिस, कॉलेज, हॉस्पिटल, शॉप, ऑर्फन, डॉक्टर, मॉडर्न, मॉनीटर वगेरे केटलाक अरबी, फारसीना शब्दोना उच्चार माटे 'अ, आ, ऐ' नी नीचे बिंदु लगाडे छे अने तेने कठनी नीचेथी उच्चारे छे जेम —अरब, आम, आशक पेशा, ऐन वगेरे

ऋ

ऋ' नो खरो उच्चार हाल तो संस्कृतज्ञोमा पण थतो जोवामा आवतो नथी उत्तर हिंदुस्तानमा

र + ि = रि

एम रि' नो जे उच्चार थाय तेवो ज खरेखर 'ऋ' नो करवामा आवे छे त्या ऋषि ने रिषि' बोले छे तेमज गुजरात तथा दक्षिण प्रदेशोमा

र + = रु

एम 'रु नो जे उच्चार थाय तेज 'ऋ' नो करे छे त्या 'ऋषि ने रुषि, ऋग्वेद' ने रुग्वेद' बोले छे

"स्वयं राजन्त इति स्वराः" महाभाष्यकारना आ नियम प्रमाणे हाल 'ऋ नो स्वयं प्रकाशित उच्चार न थतां 'र' व्यञ्जननी मददथी थाय छे *

---

* आशा छे के साक्षरवर्गो ए सबंधे निर्णय उपर आववा मनन करशे

'ॠ' नो दीर्घ प्रयोग हिंदीमा छेक नथी.

'ॡ' हिन्दीमा पण आवतो नथी

" " (अनुस्वार)

हिन्दीमा अनुस्वारनो उच्चार 'न' ना जेवो थाय छे जेम —

हन्स, अन्श

आम लखवाथी जेवो उच्चार थवो जोइए तेवोज

हंस, अंश

आम लखवाथी करवामा आवे छे

'ँ' (अर्ध अनुस्वार)

केटलाक शब्दोमा अनुस्वारनो पूरो उच्चार न थता अर्धो थाय छे तेवा उच्चार माटे अनुस्वार साथे अर्धचंद्र जेवु चिन्ह निश्चित कर्युं छे§ जेम —

बाँस, ईँट ऊँट ऊँचा, साँड, आँख, आँच साँच साँप, साँढ वगेरे

---

§ कवित् आ नियमनुं पालन नथी पण थतु.

व्यञ्जन

क	ख	ग	घ	ङ
ક	ખ	ગ	ઘ	ઙ
च	छ	ज	झ	ञ
ચ	છ	જ	ઝ	ઞ
ट	ठ	ड	ढ	ण
ટ	ઠ	ડ	ઢ	ણ
त	थ	द	ध	न
ત	થ	દ	ધ	ન
प	फ	ब	भ	म
પ	ફ	બ	ભ	મ

य	र	ल	व
ય	ર	લ	વ
श	ष	स	
શ	ષ	સ	હ

क्रमहीन व्यञ्जन.

ब	ख	ज	क	झ	च	फ	
ग	ङ	घ	छ	ञ	ढ	ध	
ड	ट	ठ	त	भ	थ	न	
		म		द		प	
र	व	श	ह	स	य	ष	ल

फकत नीचेना सात व्यञ्जनोनी आकृतिमां अतर छे

ક	ખ	ચ	જ	ઝ	ફ	બ
क,	ख,	च,	ज,	झ,	फ,	ब.



ळ = ળ

'ळ' अक्षरनो प्रयोग हिंदीमा छेक थतो नथी, गुजरातीमा

‡ वधारे ध्यानथी जोतां एकदर गुजराती अक्षरोमां नागरी लिपिनु ज वळण देखाई आवे छे

व्यञ्जनना उच्चारण.

'ळ' नो खप पडे छे त्या त्या हिंदीमा कोई ठेकाणे 'ड' अने कोई ठेकाणे 'ल' आवे छे. जेम —

ગોળ = गुड, કાળ = काल, માળા = माला, वगेरे

फारसी, अरबी अंग्रेजी अने हिंदीना खास उच्चारो.

हिंदीमा आवता फारसी अरबी अंग्रेजी अने पोते हिंदीनाज केटलाक शब्दोना खास उच्चार माटे नीचेना सात व्यञ्जनोनी-नीचे बिंदु लगाडे छे जेना उच्चारना दाखला वातचीत थता जडी आवे छे

क़ ख़ ग़ ज़ ड़ ढ़ फ़

अरबी अने फारसीमां	क ख ग ज फ
अंग्रेजीमां	ज फ
हिंदीमां	ड ढ

फारसी अने अरबी.

क —मज़ाक़, क़ब्र, माक़ूल वक़्त, क़रीब, क़ुरबान वगेरे

ख —ख़ाक, ख़्याल, ख़बर, ख़न्दक़, ख़िलाफ़, मख़ज़न वगेरे

ग —ग़लत, दारोग़ा, ग़नीम, चिराग़ दग़ा, मुग़ल, वगेरे

ज —ज़बान, ज़माना, ज़रूरत गुज़रना अर्ज़ी मर्ज़ी, दरज़ी,

रोज, वगेरे

फ़:—तरफ फक्क, लुत्फ, तुहफ़ा, साफ माफ, नफ़ा, वगेरे

अंग्रजी.

ज़:—मोज, रूपीज इज हिज, साइज वगेरे.

फ़:—फिट्, फेट, लेफ़्ट लाइफ़ सॉफ्ट वगेरे

हिन्दी.

ड़—लड़की, लड़ी, छड़ी, उड़ा, खड़ा, दमड़ी घोड़ा, घड़ा धड़ गाड़ी, साड़ी सड़ा, पड़ा घड़ी हाड़ वगेरे

ढ़:—बाढ़, गढ़ मढ़ो, गढ़ना, पढ़ना चढ़ाई गढ़ाई वगेरे

हिंदीना उपला ¹ड़, ढ़ ना उदाहरणवाळा शब्दो साथे बिन्दु वगरना शब्दोने सरखावता उच्चारनो फेर म्हेजे जणाई आवे छे.

	ड़			ढ़		
जेम—घोड़ा	अने	अडा	चढ़ाई	अने	ढोल
घड़ा	,,	खड्डा	मढ़ी		ढॅग
पड़ा		पडा	गढ़ना		ढाल
लड़ा	,,	लड्डू	बाढ़		ढढेरो
घड़ी	,,	अड्डा वगेरे	गढ़		ढेर वगेरे

क् + ष = क्ष ‘क्ष’ अने ज्ञ ज् + ञ = ज्ञ

---

१ उपला शब्दो पैकी घणाखरा गुजरातीमां पण तेज अर्थे साथे वपराय छे

'क' अने 'ष' ने जोडवाथी 'क्ष' थाय छे, माटे —
'क्ष' आम लखवाथी जे उच्चार थाय छे तेज उच्चार
'क्ष' आम लखवामा समजी लेवो जोइए तेमज —
'ज्' अने 'ञ' ने जोडवाथी 'ज्ञ' थाय छे माटे —
'ज्ञ' आम लखवाथी जे उच्चार थाय छे तेज उच्चार
'ज्ञ' आम लखवामा समजी लेवो जोइए

हाल उत्तरीय हिंदमा 'ज्ञ' नो उच्चार 'ग्यँ' ना जेवो, गुजरातमा 'ग्नँ' ना जेवो अने दक्षिणमा 'द्न' ना जेवो थाय छे, अे पैकी स्वाभाविक-खरो एक पण नथी खरो तो 'ज्ञ' ना जेवोज छे.

आठ अक्षरोना आकार.

हिंदीमा नीचेना आठ अक्षरोनु स्वरूप बीजी रीते पण लखाय छे जेम—

अ	ऋ	ऌ	झ	ण	भ	ल	श
अ	ऋ	ॡ	ऊ	ण	भ	ल	श

| ए — ऐ |

गुजरातीमा 'अ' अ नी माफक हिन्दीमा अे, अै' एवु स्वरूप नथी थतु, पण 'ए ऐ, अेवु थाय छे ते तरफ ध्यान राखवु

स्वाध्याय १

१ ओछा मळता आवता स्वरूपना स्वर कया छे ते जुदा जुदा लखी बतावो
२ 'ऑ' नो उच्चार केवा शब्दोमा थाय छे ?

३ 'ऋ' ना उच्चार सबंधे खास शु समज्या छो?
४ अनुस्वारनो उच्चार हिंदीमा केवो थाय छे?
५ अर्ध अनुस्वारना उच्चारना थोडा हिंदी शब्दोना दाखला आपो
६ कया सात व्यञ्जनाना गुजराती अने हिंदी स्वरूपमा अंतर छे?
७ ळ' नो रूप हिंदीमा केवी रीते थाय छे?
८ कया अक्षरोनी नीचे बिंदु लगाडाय छे, अने ते शा माटे?
९ 'ज्ञ' नी जोडणी बतावी कारण साथे खरो उच्चार करी बतावो
१० हिंदीमाज कया अक्षरोनु स्वरूप बीजी जातनु पण थाय छे?

मात्राओनां स्वरूप अने बाराअक्षरी

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
०	ा	ि	ी	ु	ू	े	ै	ो	ौ	ं	ः
क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ક	કા	કિ	કી	કુ	કૂ	કે	કૈ	કો	કૌ	કં	કઃ

उपर प्रमाणे दरेक व्यञ्जन साथे दरेक मात्राने जोडो

जेमः—ख, गा, घि, ची, छु, जू, झे, टै, ठो, डौ, ढं, पः वगेरे

र

हिंदीमा मात्र र नी साथे ु ू ए बे मात्राओ न्हेज बीजा स्वरूपे जोडाय छे जेम—

मरुस्थल, रुक्मिणी } रु ह्रस्व / रू दीर्घ } आरूढ स्वरूप

गुजरातीमां 'ज नी साथे ि ी ु ू ए चार मात्राओ बीजा अक्षरोनी पेठे न लखाता खास जुदा रूपे (जि 'जी 'जु' 'जू' आम लखाय छे तेम हिंदीमां नथी हिंदीमां तो बीजा अक्षरोना सामान्य धोरणे लखाय छे

२०२
३०३८७

मात्राओनी याजना (जोडणी)

मात्राओना अनुक्रमथी तेमनुं स्वरूप देखाडवा माटे थोडाक शब्दो

अः—कल, रथ, दल, वन, कमल, चपल

आः—राज, रात, भात, सात, आठ, मास

इः—निश, दिन, तिथि, विधि, सित, शनि

ईः—तार, गीर, चीर, पीर, खीस, तीसरा, परीक्षा

उः—मुख, सुख, मुध, बुध, खुश, कुमुद

ऊः—भूप, इश, शूर, पूत, दूषण, दूमग

ऋः—तृति, मृषा, गृह, कृषक, वृषभ, पृथिवी

एः—केसरी, देवता, वेदना सेवता, कलेवा

ऐः—शैव्या, भैंस, रैन, बैठक, सैनिक, दैवत, सैकडा

ओः—कोडा, फोडा, लोटा, धोती, रोजगार, मोदक.

औः—फौज, मौज, सौत, हौज़, दौलत, रौनक

अंः—बंध, कंस, संवत्, संसार, बॉस, हॉक, फॉस

अः,ः—दुःख, दुःशासनः, मनःकामना, अधःपात.

थोडाक जोडाक्षरनुं स्वरूप दर्शन.

माध्य	पद्मिनी	शक्ति
विद्या+	ब्राह्मण	गङ्गा
राज्य	जिम्ह	मङ्गल
मद्य	श्लोक	सच्चा
उद्यान	विप्लव	काञ्चन
वाक्य	स्वल्प	उद्धार
मक्खी	ग्रह	उद्भव
असह्य	पक्व	गुम्फित
वृत्त	ज्वाला	अल्प
गृह	खट्वा	लक्ष्मण
पात्र	विद्वान्	मूर्च्छित
मित्र	जिह्वा	धैर्य
श्रम	कृष्णा	आश्चर्य
ह्रास	नग्न	धर्म्म
मूर्ख	विघ्न	सूर्य्यावर्त्त
रुक्मिणी	प्रच्छन्न	आर्य्यावर्त्त

+ गुजराती भणता केटलाक विद्यार्थीओ 'विद्या' अने 'विध्या'ना अंतरने ध्यानमां नथी राखता तेम न थवु जोइए

'र' नुं उपर जवुं.

(रेफस्योर्ध्वगमनम्)

'र' पछी स्वर आवे तो 'र' ते स्वर पहेलां नीचे रहे छे जेम —

अभ्र, तक्र, नम्र, पुत्र वगेरे

'र' पछी व्यञ्जन आवे तो 'र' ते व्यञ्जन पहेला उपर रहे छे जेम —

कर्म, गर्त, तर्क, धूर्त वगेरे

स्वाध्याय २

१ —'र' नी साथे ह्रस्व, दीर्घ उकारने अने 'ज' नी साथे ह्रस्व तेमज दीर्घ इकार उकारनी मात्राओने हिंदी तेमज गुजरातीमा मरखावीने लखी बतावो

२ —(क) विद्या मद्य अने साध्य, अध्याय (ख) ब्राह्मण अने जिम्हा, (ग) वृत्त अने सूर्यावर्त्त, गृह अने ग्रह (घ) उद्यान अने उद्धार, विद्या अने विद्वान् आ शब्दोनी जोडणी उपर ध्यान आपी उच्चार करी बतावो.

३:— ह्रस्व अने दीर्घ.

' ि ' ' ी ' वच्चे अने ' ु ' ' ू ' वच्चेना उच्चारनु अंतर

ि			ु		
विधि	अने	सुधी	सुत	अने	सूत
मुनि	,,	धनी	द्रुत	,,	दूत
मणि	,,	गुणी	शुक	,,	शूद्र
बधिर	,,	अधीर	आहुत	,,	आहूत
मति	,,	सती	कुल	,,	कूल
धृति	,,	भामती	पुर	,,	पूर
सृष्टि	,,	नटी	बुलबुल	,,	बबूल
दृष्टि	,,	वटी	सुप	,,	सूप
पति	,,	आरती	सुख	,,	भूख
दिन	,,	दीन	दुष्ट	,,	दूषण
भिक्षा	,,	परीक्षा	दुगुना	,,	दूसरा
शिक्षा	,,	दीक्षा	पुन	,,	पूत

आ शब्दोनी जोडीनी वच्चे ह्रस्व, दीर्घनो विचार राखी उच्चारनु अंतर उघाडु बोली बतावो *

---

* गुजरातीमां कोई वखते बोलवा, लखवामां ह्रस्व दीर्घनो विचार बाजुए मूकी देवाय छे, हिंदीमां तेम न थवा पामे ते ध्यानमां राखवु

पाठ १

घर*	=	ઘર	कुरता	=	પહેરણ
बन	=	વન	कपडा	=	કપડુ,કાપડ
खेल	=	રમત–ખેલ	थैला	=	કોથળો
कलम	=	કલમ	जेब	=	ગજવુ
दावात	=	ખડીયો	थाली	=	થાળી
किताब	=	ચોપડી	लोटा	=	લોટો
गुरुजी	=	ગુરુજી	कटोरा	=	વાડકો
स्याही	=	શાહી	कटोरी	=	વાડકી
खिलौना	=	રમકડુ	छुट्टी	=	રજા
चाकू	=	ચપ્પુ	पेड	=	ઝાડ
सजा	=	શિક્ષા	छाया	=	પડછાયો
पोस्टकार्ड	=	કાગળ	भात	=	ભાત
चिट्ठी	=	ચિઠ્ઠી	दाल	=	દાળ
दरवाजा	=	દરવાજો બારણુ	रोटी	=	રોટલી
खिडकी	=	બારી	शाक	=	શાક
कागज	=	કાગળ	धूप	=	તડકો
फाटक	=	દરવાજો(ખીડકી)	लोग	=	લોકો

* एवा एकज अर्थमा हिंदी तथा गुजरातीना घणा शब्दो सरखा स्वरूपना होय छे

पाठ २

१. मैं = હુ	हम = અમે
२. तू = તુ	तुम = તમે
३. वह = તે	वे (वह)= તેઓ

पाठ ३

ना === वुं

आना = આવવુ	लिखना = લખવુ
जाना = જવુ	पढना = ભણવુ વાચવુ
उठना = ઊઠવુ	हँसना = હસવુ
बैठना = બેસવુ	रोना = રડવુ, રોવુ
लेना = લેવુ	खेलना = રમવુ
देना = દેવુ (આપવુ)	कूदना = કુદવુ
खाना = ખાવુ	कहना = કહેવુ, બોલવુ
पीना = પીવુ	सुनना = સાભળવુ
बनाना, करना } = કરવું	दौडना = દોડવુ

रखना, धरना = મૂકવુ	भागना = ન્હાસવુ
सोना = ઊંઘવુ	रहना† = રહેવુ
जागना = જાગવુ	ठहरना = થોભવુ
उड़ना = ઊડવુ	गिरना = પડવુ
होना = હોવુ, થવુ	चौंकना = ચમકવુ

पाठ ४

है = छे जाता है = जाय छे

पुरुष

ता	ते
१ मैं जाता हू = હુ જાઉ છુ	२ हम जाते है = અમે જઇએ છીએ
३ तू जाता है = તુ જાય છે	४ तुम जाते हो = તમે જાઓ છો
५ वह जाता है = તે જાય છે	६ वे(वह) जाते है = તેઓ જાય છે

स्त्री

ती	ती
१ मैं जाती हू = હુ જાઉ છુ	२ हम जाती है = અમે જઇએ છીએ
३ तू जाती है = તુ જાય છે	४ तुम जाती हो = તમે જાઓ છો
५ वह जाती है = તે જાય છે	६ वे (वह) जाती है = તેઓ જાય છે

---

† उपला त्रणे पाठोमां हिंदी अने गुजरातीमां वधारे मळता आवता शब्दोने जरा मोटा अक्षरे लख्या छे

पाठ ५

१ मैं खाता हू = हु खाउ छु	१ हम खाते हैं = અમે ખાએ છીએ
मै खाती हू = ,,	हम खाती है =
२ तू खाता है = तु ખાય છે	२ तुम खाते हो = तमे ખાઓ છો
तू खाती है = ,,	तुम खाती हो = ,,
३ वह खाता है = ते ખાય છે	३ वे (वह) खाते है = तेओ ખાય
वह खाती है =	वे (वह) खाती हैं =

विधान.

आ पाठमा गुजराती लीटीओनी नीचे मूकेली ,, आवी मतरनी निशानी पाताथी उपरनी लीटी प्रमाणे होवानु जणावे छे पण तेवु हिंदीनी लीटीओमा नथी, एटले जेम हिंदीमा उपरनी लीटीमा 'खाता' अगर 'खाते' आवे छे तेम नीचेनी लीटीमा नथी पण हिंदीमा तो नीचेनी लीटीओमा दरेक ठेकाणे "खाती" आवे छे. ए भेदने बराबर ध्यानमा राखवो

स्वाध्याय ३

१ —एकज अर्थना कया शब्दो (पाठ १ प्रमाणे) हिन्दी अने गुजरातीमा मळता आवता नथी ते बोली जाओ

२ —नीचे बतावेली मींडा मूकेली खाली जगामा चौथा पाठ प्रमाणे शु लखवु जोइए ते तमारी नोटमा उतारी–पूरा लखी बतावो

पुरुष

१ मैं खाता = હુ ખાઉ છુ	२ हम = અમે ખાઇએ છીએ
३ .. आता . = તુ આવે છે	४ तुम . . = તમે ઉઠો છો
५ वह ले ... = તે લે છે	६ वे . = તેઓ આપે છે

स्त्री

१	पीती	= हुं पीउं छुं	२	हम है	= अमे करीए छीए
३	रख है	= तुं मूके छे	४		= तमे ऊभा छो
५	हँसती	= ते हसे छे	६	(वह) लिख	= तेओ लखे छे

३ —पाचमा पाठमा गुजराती लीटीओनी नीचे ,, आवी निशानी आवेली होवानु अने हिंदी लीटीओमा तम नहीं होवानु कारण समजावो

पाठ ६

केवल	=	માત્ર	नहीं	=	નહિ
आज	=	આજે	न	=	ના
कल	=	કાલે	मत	=	મા, ના
क्यों	=	કેમ	तुरंत	=	તરત
कि	=	કે	फिर	=	ફરી, પછી
क्या	=	શું	तक	=	સુધી
बहुत	=	ઘણો, બહુ	अगर	=	જો
और	=	બીજું, અને, ને, વધારે	यदि	=	,,
			जो	=	,,
ही	=	જ	साथ	=	જોડે, ભેગું
भी	=	પણ	तो	=	તો
हाँ	=	હા	तोभी	=	છતાં

पर = પણ		नजदीक = નજીક	
किन्तु = ,,		पास = પાસે	
खूब = ખૂબ		बारबार = વખતોવખત	
यानी = એટલે		हमेशा = હરહમેશ, હમેશા	
अर्थात् = ,,		ज्यादः = બધુ, વધારે	
भला = વારૂ		थोड़ा = થોડુ	
या = અગર		वापस = પાછો, પરત	
जल्द = જલદી, વહેલો		ठीक = ઠીક, ખરૂ	
अच्छा = સારૂ		बल्कि = વળી	
दूर = દૂર			

पाठ ७

१ अब = હવે, અત્યારે, હમણાં

२ तब = ત્યારે

३ कब = ક્યારે

४ जब = જ્યારે

५ यहाँ = અહીંઆ, અહીં

६ वहाँ = ત્યા

७ कहाँ = ક્યા

८ जहाँ = જ્યા

---

१ अभी = હમણાંજ, હજી

२ तभी = ત્યારેજ

३ कभी = કોઇપણ વખતે

४ जभी = જ્યારેજ

५ यहीं =	અહીંજ	१ इधर =	આ તરફ
६ वहीं =	त्यांज	२ उधर =	તે તરફ
७ कहीं =	કોઇપણ ઠેકાણે	३ किधर =	કઇ બાજુ
८ जहीं =	જ્યાં	४ जिधर =	જે બાજુ

विधान.

१ 'क्यों' अने 'कि' भेगा पण आवे छे जेमके 'क्योंकि'

२ 'और' प्रसंग प्रमाणे त्रण अर्थमा आवे छे जेम —१ मैं और वे खाते है २ रोटी और लेना है? ३. वहां और कौन जाता है? यह और ही बात है इत्यादि

३ 'पण' 'भी' ना अर्थमा वाक्यनी वच्चे होय तोज आवे छे वाक्यना आरंभमा 'पण' ना अर्थमा 'पर' अने 'किन्तु' आवे छे जेम —હું પણ જાઉં છું=मैं भी जाता हू

પણ તે નથી જતો=पर वह नहीं जाता

४ ताकीद करवामा, हुकम करवामा 'न' 'मत' आवे छे जेम —'ऐसा मत करो' "वह ऐसा न करे"

५ 'नहीं' वाक्यमा आववाथी छेल्लो शब्द नीकळी जाय छे

जेमः—'१ वह जाता है / २ वह नहीं जाता }   १ हम खाते है / २ हम नहीं खाते }

१ वे सोते है / २ वे नहीं सोते }   १ तू भागता है / २ तू नहीं भागता }

६ न' वातने पाकी करवामा पण वपराय छे जेम —'क्यो? ठीक है न?'' आ वाक्योमा छेलो शब्द 'है' अने 'है' नीकळी गयो छे

७ 'अब वगेरे आठ शब्दोमा ही जोडवाथी जे अर्थ सरे छे तेज अर्थ अनुक्रमे 'अभी' वगेरेथी सरे छे अेटले 'ही' नो समावेश थई जाय छे 'ही' जुदो न लखाता 'अभी' वगेरे रूपथी लखाय छे जेमके —

अब ही = अभी*	यहाँ ही = यहीँ
तब ही = तभी	वहाँ ही = वहीँ
कब ही = कभी	कहाँ ही = कहीँ
जब ही = जभी	जहाँ ही = जहीँ

एवीज रीते:—

इस+ही=इसी, इन+ही=इन्हीं, उस+ही=उसी, उन+ही=उन्हीं, जिस+ही=जिसी, किस+ही=किसी, किन+ही=किन्हीं, वगेरेमां समजी लेवानु छे

स्वाध्याय ४

१ —नीचेना वाक्योने गुजराती भाषामा लखो —

१ मै यहा कब आती हूं?‡ २ तुम वहा क्या करते हो?

---

* कोई ठेकाणे 'अभी' वगेरे न लखता 'अब ही' वगेरे लखीने 'ही' जुदो पण लखाय छे

‡ शिक्षक महाशयोए आ वाक्यो विद्यार्थीओने शक्ति प्रमाणे आपवा

३ वह और तू किधर जाती है? ४ वह कहा खेलता है?
५ हम भी किताब पढ़ते हैं ६ वे क्या लिखती है?
७ तुम तो चाकू देती हो ८ क्योंकि मै और चिट्ठी पढ़ता हू
९ वह लोटा लेता है १० तू खूब हसती है
११ वे तो अभी सोते है १२ हम कब जागती है?

---

१ पर गुरुजी तब कहा बैठते है? २ अब यहा धूप बहुत है
३ तो क्या उधर भी छाया है? ४ हाँ वहा तो पास ही पेड है
५ तो फिर तुम कहा बैठती हो? ६ जहा वे बहुत भागती हैं
७ किन्तु मैं अब जल्दी दोड़ता हूँ ८ क्योंकि वे भी यहा फिर रहती हैं
९ पर तू तो वहा बहुत कूदता है १० क्या मैं वहा नही खेलती हू?
११ वह रोटी खूब खाती है १२ अगर हम भी वहा ठहरते हैं

७—नीचेना वाक्योने हिंदी भाषामा लखो

पुरुष होय तो

૧ તું શું કરે છે? ૨ હું રમું છું ૩ તેઓ જાય છે
૪ તમે આવો છો ૫ અમે વાંચીએ છીએ ૬ તે ભણે છે
૭ તે [illegible] છે ૮ તું શું મૂકે છે? ૯ તેઓ [illegible] છે
૧૦ તમે નાચો છો ૧૧ અમે સાંભળીએ છીએ ૧૨ હું થાકું છું

स्त्री होय तो

૧ તું ક્યાં બેસે છે ૨ હું પણ અહીં જાઉં છું
૩ તમે ક્યારે આવો છો? ૪ અમે ત્યારે જઈએ છીએ
૫ તેઓ પણ ત્યાં મૂકે છે ૬ તે અહીંયાં રહે છે

૭ તુ નમકીન છે   ૮ પણ તે ખટાશ આપે છે

૯ તમે રોટલી કરો છો   ૧૦ અમે પણ શાક ખાઇએ છીએ

૧૧ હું જ ભિક્ષા કરું છું   ૧૨ તું ભાત ખાય છે

पाठ ८

गिनती = આંક

१ एक = ૧ એક	अकेला = એકલો	पहला = પહેલો
२ दो = ૨ બે	दोनों = બંને	दूसरा = બીજો
३ तीन = ૩ ત્રણ	तीनों = ત્રણે	तीसरा = ત્રીજો
४ चार = ૪ ચાર	चारों = ચારે	चौथा = ચોથો
५ पाँच = ૫ પાંચ	पाँचों = પાંચે	पाँचवाँ[1] = પાંચમો
६ छह = ૬ છ	छहों = છએ	छठा = છઠ્ઠો
७ सात = ૭ સાત	सातों = સાતે	सातवाँ = સાતમો
८ आठ = ૮ આઠ	आठों = આઠે	आठवाँ = આઠમો
९ नौ = ૯ નવ	नौओं = નવે	नवाँ = નવમો
१० दस = ૧૦ દસ	दसों = દસે	दसवाँ = દસમો

---

१ गुजरातीनी माफक हिंदीमां पण पांचने अने सातथी दरेक आंकडे "वाँ" प्रत्यय लगाडाय छे

पाठ ९

गेंद	=	દડો	कटहल	-	ફણસ
रथ	=	રથ	छत्री	=	છત્રી
अगीठी	=	સગડી	घडा	=	ઘડો
सकोरा	=	શકોરૂ	धुजा	=	ધજા
चिडिया	=	ચકલી	जहाज	=	વહાણ
बेल	=	બીલી	पतग	=	પતગ
बिल्ली	=	બિલાડી	तलवार	=	તરવાર
चूहा	=	ઉદર	गद्हा	=	ગધેડુ
टट्टू	=	ટટ્ટુ	नगाडा	=	નગારૂ
गाय। गौ।	=	ગાય	मक्खी	=	માખી
मकडी	=	કરોળિયો	उंगली	=	આગળી

पाठ १०

खरल.	=	ખલ	घास	=	ઘાસ
बकरी	=	બકરી	गुलाब	=	ગુલાબ
बैल	=	બળદ	लड़का	=	છોકરો
हल	=	હળ	लड़की	=	છોકરી

हिरन	=	હરણ	बाग	=	વાડી
फूल	=	ફૂલ	खेत	=	ખેતર
आम	=	કેરી	जंगल	=	જંગલ
आमका पेड	=	આંબો	पानी	=	પાણી
सीताफल, शरीफा	=	સીતાફળ, અનૂરા	दूध	=	દૂધ
			दही	=	દહીં
गन्ना	=	શેરડી	बरफी	=	બરફી
रस	=	રસ	पेडा	=	પેંડા
बेर	=	બોર	मट्ठा	=	છાસ
मक्खन	=	માખણ	लड्डू	=	લાડુ

पाठ ११

सर्फ	=	માત્ર	बजना	=	વાગવુ
पक्का	=	પાકો	दिन	=	દિવસ
कच्चा	=	કાચો	रात	=	રાત
हलुवा	=	શીરો	मदरसा, पाठशाला	=	નિશાળ
पूरी	=	પુરી	परीक्षा, इम्तिहान	=	પરીક્ષા

जलेबी	=	જલેબી	फल नतीजा परिणाम	=	પરિણામ
पापड़	=	પાપડ	इमला श्रुतलेख	=	શ્રુતલેખ
खिचड़ी	=	ખીચડી	छमाही	=	છ માસિક
कढ़ी	=	કઢી	वार्षिक सालाना	=	વાર્ષિક
घी	=	ઘી	तिमाही	=	ત્રિમાસિક
तेल	=	તેલ	चम्मच	=	ચમચો
चिमटा	=	ચીપીઓ	पतीली	=	તપેલી
वह	=	પેલો	कुछ	=	કંઇ
तवा	=	તવો	कॉपी	=	નોટ
चूल्हा	=	ચૂલ્હો	कैंची	=	કાતર
चौका	=	ચોકો	सूजा	=	સોયો
चटनी	=	ચટણી	रूल, रौल	=	આંકણી
आचार	=	અથાણુ	सुई	=	સોય
ठंडा	=	ટાઢુ	डोरा धागा	=	ધાગો
गरम	=	ગરમ ઊનુ	घड़ी	=	ઘડિયાળ

कड़ाही	=	કડાહી	घटा	=	કલાક
भात	=	ભાત	घंटी	=	ઘંટ
			चक्की	=	ઘંટી
पनीर, शिखरन	=	શિખંડ	जोड	=	સરવાળા
मलाई	=	મલાઇ	बाकी	=	બાદબાકી
रबड़ी	=	બાસુંદી	ज़रब, गुणा	=	ગુણાકાર
खोया	=	માવો	भाग तकसीम	=	ભાગાકાર

स्वाध्याय ५

१:—नीचेना वाक्योने गुजराती भाषामां लखो.

१ रामचंद्र आज कल वहां क्या पढता है?
२ यहाँ एक बकरी दो बैल और तीन हिरन पानी पीते हैं
३ लड़की गाना गाती है और लड़का नगाडा बजाता है
४. गाय घास यहीं खाती है पर टट्टू और घास नहीं खाता.
५ सीता आम बहुत खाती है. मैं भी ज्यादह खाता हूं.
६ पर लड़का और लडकी दोनों नहीं खाते, मैं तो अभी पढता हूं
७ वह पाँचवाँ जहाज जाता है यहाँ भी मक्खी बैठती है
८ हिरन बहुत दौडता है, पर बिल्ली बहुत नहीं भागती
९ तू क्यों खेलता है. और फिर क्यों रोता है? हम अब यहा नहीं ठहरते

१० यहाँ क्या होता है, वहा तो खूब दूध होता है पर गाय नहीं देती.
११ यहाँ आम का पेड है, वहाँभी छाया है तू और गन्ना क्यों खाता है
१२ वे परीक्षा देते है, हम हिंदी पढते है और कॉपी लिखते हे
१३ मै इमला लिखता हू, तू इमला सुनता है वह इम्तिहान नहीं देता
१४ वे आचार खाते हैं, हम तो गरम दूध खूब पीते है, वह ठडा पीता है.
१५ लबा गरम है, तू खिचडी क्यों नहीं खाता, और हलवा बहुत खाता है
१६ मैं छमाही परीक्षा देता हू और खूब जल्दी लिखता हूं. क्यो ठीक है न ?

२ — मै' नी साथे 'जाना' आवे तो "मै जाता हू' वाक्य बने 'तुम' नी साथे करना' आवे ता तुम करते हो" वाक्य बने. वगेरे, एवी ज रीते थोडाक वाक्य बनावो

	पुरुष			स्त्री	
जेमः—'हम'	नी साथे	दौड़ना	'मैं'	नी साथे	'आना'
'वे'	,,	खाना	'तू'	,,	'धरना'
तू	,,	रोना	तुम	,,	बैठना
मैं	,,	खेलना	वे	,,	रखना
वह	,,	ठहरना	हम	,,	देना
तुम	,,	भागना	वह	,,	बनाना
क्या	,,	होना	क्या	,,	सुनना
और	,,	पढना	फिर	,,	लिखना

३—जेम 'खाता हूं' 'पीते हैं' 'खेलते हो' वगेरेनी पहेला 'मैं' 'हम' 'वे' 'तुम' वगेरे लागे छे तेम नीचेना शब्दोनी पहेला लगाडो अने खाली जगाना पूरा वाक्य बनावो

पुरुष.

१	दौडता हूं	४	जाते हो
२	खाते हैं	५	जाता है
३		६	,,

स्त्री

१	खेलती हैं	४	खेलती है
२	,,	५	,,
३	खेलती हो	६	खेलती हूं

ऊपरनां बधा वाक्योंने फरी लखी, पछी गुजराती भाषामा लखो

४— २, ३, ६, ९ आ अंकोने हिंदी उच्चारमा लखो

५—પણ, જો, જલદી, નજીક, હમના, હમણા જ, આ તરફ જ, ત્યાં આગળ છતા, એટલે, આગળ, आ शब्दोने हिंदी भाषामा लखो

पाठ १२

ने	=	એ	माताने	=	માતાએ
को	=	ને	माताको	=	માતાને

से	=	થી	मातासे	=	માતાથી
,,	=	એ, વડે	,,	=	માતાએ, માતા વડે
के लिये	=	ને માટે	माताके लिये	=	માતાને, માટે-કાજે
का	=	નો, નુ	माताका	=	માતાનો, માતાનુ
की	=	ની	माताकी	=	માતાની
के	=	ના	माताके	=	માતાના
,,	=	નાં	,,	=	માતાનાં
मे	=	માં	मातामे	=	માતામાં
पर	=	ઉપર	मातापर	=	માતા ઉપર

(अनेक)

स्त्री—आ	पुरुष—अ
माता	लोग
माताओंने	लोगोंने
माताओं को	लोगो को
माताओं से	लोगों से
माताओं के लिये	लोगों के लिये
माताओं का, के, की,	लोगों का, के, की
माताओं में, पर	लोगों में, पर

पुरुष—अ	(एक)	स्त्री—ई
देव		नारी
देव को		नारी को
देव से, ने		नारी से, ने
देव के लिये		नारी के लिये
देव का, की, के		नारी का, की, के
देव में		नारी मे
देव पर		नारी पर

पाठ १३

(एक)

राम ने	= રામે	शम्भु ने	= શંભુએ
राम को	= રામને	शंभु को	= શંભુને
राम से	= રામથી	शम्भु से	= શંભુથી
राम के लिये	= રામને માટે	शम्भु के लिये	= શંભુને માટે
राम का	= રામનો, રામનુ	शम्भु का	= શંભુનો, શંભુનુ
राम की	= રામની	शम्भु की	= શંભુની
राम के	= રામના	शम्भु के	= શંભુના
राम में	= રામમાં	शम्भु में	= શંભુમાં
राम पर	= રામ ઉપર	शम्भु पर	= શંભુ ઉપર

आ, पाठमा आवेला 'ने' 'को' वगेरे मोटा अक्षरे लखेला शब्दोने 'सुमति' 'भक्ता' 'प्रभु' 'देव' 'लडकी' अने 'मन्दिर' शब्दो साथे उपर प्रमाणे जोडीने बोली जावो

पाठ १४

पुरुष('आ'नो 'ए')

१ છોકરો	= लडका	लड़केने	=	છોકરાએ
२ રમકડું	= खिलौना	खिलौने को	=	રમકડાને
३ દરવાજો	= दरवाज़ा	दरवाज़े से	=	દરવાજાથી
४ કપડું	= कपडा	कपड़े के लिये	=	કપડાને માટે
५ લોટો	= लोटा	लोटे का	=	લોટાનો
६ કોથળો	= थैला	थैले की	=	કોથળાની
७ વાડકો	= कटोरा	कटोरे में	=	વાડકામાં
८ પહેરણ	= कुरता	कुरते पर	=	પહેરણ ઉપર

पुरुष–अनेक

लड़कोंने	देवों ने
खिलौनों को	कुमारों को
दरवाजों से	हाथों से
दरवाजों के लिये	शाकों के लिये
दरवाजों का	पैरों का, की
कटोरों में	दाँतों में
थैले पर	दाँतों पर

स्त्री

अ		ई
एक	अनेक	अनेक
बात	बातें	नारियां
बात को	बातों को	नारियों को
बात से, ने	नाकों से, ने	नारियोने
बात के लिये	रातोंके लिये	नारि ों के लिये
घास का, की	ऑखों का की, के	नारि ो का, की, के
लान में	ऑतों मे	नारि ों म
रात पर	ऑतों पर	ना रे ों पर

विधान.

जेम माताने 'माता से' 'राम के लिये 'शत्रु म 'शत्रु का' वगेरे शब्दोमा मूळ शब्दमा कई फेर थतो नथी तेम 'लडका खिलौना' वगेरे आठ शब्दोमा तेमज एवी जातना बीजा शब्दामा नथी कारण ए पुरुष जेवा बोलाय छे नहि स्त्री जेवा, एटले पुरुष जेवा बोलाता शब्दोना छेल्ला कानानो 'ए' थई जाय छे जेमके उपर थयु छे, के —

लडके ने, कटोरे मे वगेर, नहि के लड़का ने, कटोरा मे,

गुजरातीमा पण एने मळतो फेरफार थाय छे जेमके —

ઘોડો	=	ઘોડામાં	બચ્ચુ	=	બચ્ચાને
છોકરા	=	છોકરાો	લાકડુ	=	લાકડાનુ વગેર

पाठ १९

'को' वगेरेनीसाथे	'मैं' नो	'मुझको' 'मेरा'	हमारा वगेरे थायछे	
,,	'तू' ,,	तुझको, 'तेरा'	तुह्मारा तुमसे	,
,,	'वह' ,,	उसको,	'उनका'	,,
,,	'यह' ,,	इसका,	इनको,	,,
,,	'जो' ,	जिसमे,	जिन्हसे	,,
,,	'कौन' ,,	किसको,	किनको,	,
,	'कोई' ,,	किसीका,	किन्हींमें	,,

एक

जेमकेः—मैं वह

मैं	=	હું	वह	-	તે (પેલો)
मुझको मुझे	=	મને	उसको उसे	=	તેને
मुझसे	=	મ્હારાથી	उससे	=	તેનાથી
मेरे लिये	=	મ્હારા માટે	उसके लिये	=	તેને માટે
मेरा	=	મ્હારો, મ્હારૂ	उसको	=	તેનો, તેનુ
मेरी	=	મ્હારી	उसकी	=	તેની
मेरे	=	મ્હારા	उसके	=	તેના
मुझमें	=	મ્હારામાં	उसमें	=	તેમાં
मुझ पर	=	મ્હારા ઉપર	उसपर	=	તે ઉપર

एवीज रीसे 'तू' 'यह' 'जो' 'कौन' 'कोई' ना विषे समजी लेवानुं छे

अनेक

मैं—	हम हमारा, हम से, हमें हमारे लिये, हमारे में
तू—	तुम तुह्मारा, तुम से तुम्हें, तुह्मारे लिये, तुह्मारे मे,
वह—	उन, उन्होंका, उन के लिये, उन में
यह—	ये इन, इनका, इन्हों में, इन के लिये
जो—	जिन, जिन्ह जिनका, जिन्होंने, जिन्होंका,
कौन–	किन, किन्ह, किन्होने, किन से,
कोई–	किस, किसीका, कसीमे—वगेरे

स्वाध्याय ६

१:—'मैं' नी माफक (पाठ १८ प्रमाणे) तू, जो, कौन, कोई-ईना रूप लखो.

२:—नीचेना वाक्योने हिंदी भाषामां लखो:—

१ અહીં ઘરમા તુ શુ મૂકે છે? મ્હારી ચોપડી કોણ લે છે?
२ ઝાડ ઉપર ચકલી બેસે છે પણ ફળ ખાતી નથી
३ તેના ઘરમા ફૂલ છે આના ઘરમા છોકરી રમે છે
४ આંબા ઉપરથી કેરી પડે છે, તેને હુ ખાઉં છુ, તને પણ આપુ છુ.
૫ છોકરો વાડીમાથી સીતાફળ લે છે હુ તેને શેરડી આપતો નથી.

૬ તેની ગાય દૂધ આપે છે, તેના પેંગથી દૂધ લઉં છું

૭ વાડીમા કરોળીઓ છે તેનો ગોડરો કમ નહાસ છે

૮ તુ ક્યાથી આવે છ અને તઓને માટે શુ આપે છે

૯ ખેતરમા બળદ ગામ (ને) માય ્ અને હજી પણ ત્યાજ છે

૧૦ આ લોટામા દૂધ છે, પણી નથી આ ઝાડથી કાણ પડ છે

૧૧ તેઓ વાડકા વડે દૂધ પીએ છે અને થાળીમા ખાય છે

૧૨ આ પેહેરણ તે ગોડરાનુ છે ગ્વાલમા કોણ ગમે છે

૧૩ માતાને માટે તે ડેગી આપે છે તે નાટાનુ પાણી

૩:—નીચેના વાક્યોમાં ભૂલો કાઢો:—

१ माते के घर जाता हैं २ लड़का का पुस्तक है

३ लोटा में क्या रखता है ? ४ भद्र के लिये क्या देतो हो?

५ तुम किसके घर ठहरता है ६ हम तुह्मारे घर आता है

૪:—નીચેના વાક્યોને ગુજરાતી ભાષામાં લખો:—

१ हम तेरे घर नहीं आते २ मुझे तू सीताफल क्यों देता है ?

३ तू माता के लिये क्यों नहीं देता ४ भद्रा के लिये देता है.

५ यह किस लड़के का पुस्तक है ?

६ राम लोटे में दूध रखता है ७ तू लड़के का आम क्यों लेता है ?

८ मैं यहा रोज लिखता और पढ़ता हू

पाठ १६

गा, गी, गे = શે, ઈશ, શું, શો

पुरुष

१ मैं आऊंगा	= હું આવીશ	२ हम आयेंगे	= અમે આવીશુ
३ तू आयेगा	= તું આવીશ	४ तुम आओगे	= તમે આવશો
५ वह आयेगा	= તે આવશે	६ वे(वह)आयेंगे	= તેઓ આવશે

स्त्री

मैं आऊंगी	= હું આવીશ	हम आयेंगी	= અમે આવીશુ
तू आयेगी	= તું આવીશ	तुम आओगी	= તમે આવશો
वह आयेगी	= તે આવશે	वे(वह) आयेंगी	= તેઓ આવશે

पाठ १७

मैं आऊंगा	= હું આવીશ	हम आयेंगे	= અમે આવીશુ
मैं आऊंगी	= * ,,	हम आयेंगी	= ,,
तू आयेगा	= તું આવીશ	तुम आओगे	= તમે આવશો
तू आयेगी	= ,,	तुम आओगी	= ,,
वह आयेगा	= તે આવશે	वे(वह)आयेंगे	= તેઓ આવશે
वह आयेगी	= ,,	वे(वह)आयेंगी	= ,,

* गुजराती अर्थमां वाक्यरूप पुल्लिंग प्रमाणे ज

स्वाध्याय ७

१ नीचेना शब्दोने हिंदीमां लखो:—

ભિક્ષા માટે, બગીચામા, ઝાડ ઉપર, નથળામા ફળ, કાગળ પેન્સી ગાડી ચોપડીનો ફકો, તમારુ તમારા મને, આને ગાળથી, કલમ વડે, પેગરણથી રામજો, ભદ્રાની, તેનુ ઝાડનો

२:—नीचे बतावेली मींडां मूकेली खाली जगाए शु लखवु जोइए ?

पुरुष

आज खेलेंगे.	= અમે આજે તમારા ઘેર રમીશુ
तुम कल क्या	= તમે તેને માટ કાલે શુ આપશો ?
मैं उस खिलौने	= હુ તે ગડગોળા રમવા આજે આપીશ
त किसके आज लेगा ?	= તુ કોના ઘરથી આજે લેશે ?
वे चाकू	= તેઓ ગામા ચપ્પુ મને આપશે
गाम ता लड्डु	= પણ ગામ તો મોતાડુ આપશે નહિં

स्त्री

भद्रा यहा खूब	= ભદ્રા કાલથી અહીં ખુબ રમશે
हम दौडेंगी	= અમ પણ ખડકીમા દોડીશુ
तू क्या देगी	= તુ લાડનામા ગાગા માટે શુ આપીશ ?
मेरे आजसे खूब	= તમે મારે ઘેર આજથી ખૂબ રમશો
मैं उस पेड पर. आम	= હુ તે ઝાડ પરથી તને કેરી આપીશ
वे घर से ,	= તેઓ ઘેરથી તહારા માટે ખડીયા આપશે

३:—नीचेना शब्दोना गुजरातीमां (सर्वनाम कर्त्ता साथे) अर्थ करोः—

कूदूगी दौडोगे, पढूगा रोते है, ठहरती हैं, सुनूगा, कहूंग, ठहरोगे, लिखूगा, बैठती है, उठते हो, रखती हूं, जागूगी, पिओगे सोता हू दोगी, लेंगे पढता हू, जायेगे, आओगे भागूगा आता हू, खेलती है, खेलेगी, हॅसूगा, रोऊगी

४:—पाछला पाठोमां आवेला आना, जाना, वगेरे साथे थोडाक शब्द अने अव्ययो जोडीने नवा २० वाक्य बनावो

पाठ १८

लाना	= લાવવું	हो आना	= જઈ આવવું
लेजाना	= લઈ જવું	चलना	= ચાલવું
बुलाना	= બોલાવવું	फिरना	= ફરવું
टेरना	= તેડવું	घूमना	=
गाना	= ગાવું	टहलना	= ,,
बजाना	= વગાડવું	ढूंढना	= શોધવું
बिछना	= પાથરવું	खोजना	= તપાસવું
ओढना	= ઓઢવું	लोटना	= આળોટવું
पहिनना	= પહેરવું	लेटना	= ,,

निचोडना = નિચોવવુ
माँजना = અજવાળવુ
मलना = મમળવુ
मिलना = મળવુ
समझना = સમજવુ
खोलना = ખોલવુ
चूसना = ચૂસવુ
चाटना = ચાટવુ
तानना } = { તાણવુ
खींचना } = { ખેંચવુ
मारना = મારવુ
पीटना } = ટીપવુ
ठोंकना }
कूटना = કૂટવુ
पीसना = દળવુ
राँधना = રાંધવુ
पकाना = પકવવુ
तलना = તળવુ
पकड़ना = ઝાલવુ, પકડવુ
भरना = ભરવુ
घुसना = પેસવુ

लौटना = પાછા આવવુ
सूँघना = સૂંઘવુ
देखना = જોવુ, દેખવુ
छूना = અડકવુ
चाखना = ચાખવુ
उघाड़ना = ઉઘાડવુ
काटना = કાપવુ
कतरना = કાતરવુ
नापना = માપવુ
जोडना = જોડવુ
तोडना = તોડવુ
फोडना } = ફોડવુ
चीरना } = ચીરવુ
फाडना = ફાડવુ
पूछना = પૂછવુ
पाना = પામવુ
पोंछना = લુછવુ
छोडना = છોડવુ, મૂકવુ
डालना = નાખવુ
निकलना = નિકળવુ
बनाना = કરવુ, બનાવવુ

पाठ १९

पहुचना* = પહોંચવુ
जानना = જાણવુ
लगना = લાગવુ
सूखना = સુકાવુ
झटकना = ઝાટકવુ
चमकना = ચળકવુ
गरजना = ગાજવુ
न्हाना = ન્હાવુ
धोना = ધોવુ
खोदना = ખોદવુ
जोतना = ખેડવુ
बोना = વાવવુ
छीलना = છોલવુ
छानना = ગાળવુ
बीनना = વીણવુ
बुनना = વણવુ
गूथना = ગૂંથવુ
छूटना = છૂટવુ
थूकना = થૂંકવુ
छींकना = છીંકવુ
बैठ जाना = બેસી જવુ

खाँसना = ખાંસવુ
अटकना, हिचकना = અટકવુ
भीना = ભીંજવુ
चिल्लाना, डौंकना = બરાડવુ, ચીસ પાડવી
हाँकना = હાંકવુ
पलटना = પલટાવુ
सुलगना = સળગવુ
दाबना = દાબવુ
ढाँकना = ઢાંકવુ
झपटना = ઝાપટી લેવુ-પડાવી લેવુ
छीनना = છીનવી લેવુ
छेदना = વીંધવુ
कुचलना = કચડી નાખવુ
बटना = વાટવુ
चढना = ચડવુ
उतरना = ઉતરવુ
खडा होना = ઉભા થવુ
चुप होना = છાનુ રહેવુ
मकना = શકવુ

---

* अहीं क्रियावाची अने बीजा शब्दोवडे शिक्षकोए विद्यार्थीने नवा वाक्य बनाववा माटे तेमज भाषान्तर करवा माटे तेमना स्वाश्रयने आलबत ! दोरवा

पाठ २०

किसान	=	ખેડુત	हाथ	=	હાથ
अकेला	=	એકલો	पैर	=	પગ
सब	=	બધા	बात	=	વાત
छोटा	=	ન્હાનો	अच्छा	=	સારો
बड़ा	=	મોટો	बुरा	=	નઠારો ખોટો બુરો
तोता	=	પોપટ	बुड्ढा	=	ઘરડો
मैना	=	મેના	जवान	=	જુવાન
कौआ	=	કાગડો	बंदर	=	મરકટ, માંકડુ
मुर्गी	=	મરઘી	लंगूर	=	વાંદરા
मोर	=	મોર	कुत्ता	=	કૂતરૂ
कबूतर	=	કબૂતર	बछड़ा	=	વાછડો
चील	=	સમડી	भैंस	=	ભેંસ
गिद्ध	=	ગીધ	कटिया	=	પાડી
भैंसा	=	પાડા	घोड़ा	=	ઘોડો
नाज, अनाज	=	અનાજ, દાણા	बछड़ी	=	વાછરડી
अंडा	=	ઈંડુ	नमक	=	મીઠું
कोयल	=	કોયલ	मिरच	=	મરચું
मच्छर	=	મચ્છર	मसाला	=	મસાલો
चींटी, कीड़ी	=	કીડી	ज़ीरा	=	જીરૂ
			मेथी	=	મેથી

खटमल	=	માકડ	**लौंग**	=	લવીંગ
पिस्सू	=	ચાચડ	**अजवाइन**	=	અજમો
गिलहरी	=	ખીસકોલી	**काली मिरच**	=	મરી
छिपकली	=	ગીલોડી	**हलदी**	=	હળદર
बर्र, भिड़	=	ભમરી	**नींबू**	=	લીંબુ
भौंरा	=	ભમરો	**धनिया**	=	ધાણા
शहद्की मक्खी	=	મધમાખ	**हाँडी**	=	હાંડલી
बेसन	=	બેસન	**सूजी**	=	રવો
गुड़	=	ગોળ	**शक्कर**	=	ખાંડ
मिश्री	=	ખડી સાકર	**नमक**	=	મીઠું

पाठ २१

जामन	=	જાંબુ	**फीका**	=	મોળું
खिरनी	=	રાયણ	**नमकीन**	=	ખારૂ
अमरूद	=	જામફળ	**कड़ुआ**	=	કડવો
ककड़ी	=	કાકડી	**खट्टा**	=	ખાટો
खरबूज़ा	=	શકરટેટી	**मीठा**	=	ગળ્યો
अंड खरबूज़ा	=	પપૈયા	**चरपरा**	=	તીખો
मूंगफली	=	મગફળી	**बाजरा**	=	બાજરી
बेर	=	બોર	**ज़ुआर**	=	જુવાર

सतरा	=	સતરૂ	गेहू	=	ઘઉં
नारंगी	=	નારંગી	जौ	=	જવ
अजीर	=	અજીર	उड़द	=	અડદ
किश्मिश	=	સૂકી દ્રાક્ષ	चावल	=	ચોખા
अंगूर	=	લીલી દ્રાક્ષ	अरहर	=	તુવેર
बादाम	=	બાદામ	मूंग	=	મગ
चना	=	ચણા	लोभिया	=	ચોળા
मटर	=	વટાણા	सेम	=	વાલોર
करेला	=	કારેલું	ककोड़ा	=	કંકોડું
कद्दू	=	કોળું	परवल	=	પરવળ
गोला (नारियल)	=	ટોપરૂં	भिंडी	=	ભીંડા
छुहारा	=	ખારેક	बैंगन	=	રીંગણાં–વેગણ
तरबूज	=	તડબૂચ	पोदीना	=	ફુદીનો
इत्र	=	અતર	अदरक	=	આદુ
गुलाब	=	ગુલાબ	घुइया	=	અળૂખડી
चमेली	=	ચમેલી	घुइयाके पत्ते	=	પાતરાં
पसारी	=	ગાંધી	आलू	=	બટાટા
बेला	=	મોગરો	कंडा उपला	=	છાણું
जुही	=	જાઈ	आग	=	દેવતા
केला	=	કેળું	[illegible]	=	[illegible]

सेब	=	સફરજન	लकड़ी	=	લાકડી
अनार	=	દાડમ	कोयला	=	કોલસા
अनन्नास	=	અનનાસ	ईंधन	=	બળતણ
बथुआ	=	ચાકવત	धुँआ	=	ધુમાડો
सोया*	=	સવા	पालक	=	પાલક



स्वाध्याय ८

१:—नीचेनां वाक्योने हिन्दी भाषामां पूरा रचो:—

'मै' नी साथे 'आना' आवे तो 'आऊंगा' वाक्य बने तुम नी साथे आना' आवे तो 'तुम आओगी' "तुम आओगे" वाक्यो बने वगेरे, एवीज रीते थोडाक वाक्यो बनावो साथे तेनु गुजरात करशे

:—

पुरुष			स्त्री		
मै'	नी साथे	'सीना'	'म'	नी साथे	'मारना'
वे	,,	बैठना	तुम	,,	लेजाना
तू	,,	खोजना	तू	,,	माँजना
तुम	,,	मिलना	वे	,,	धोना

* पाठ १८, १९ ना धातु तथा पाठ २०, २१ ना शब्दो साथे पोतानी इच्छा प्रमाणे थोडाक नवा वाक्यो बनाववा

हम	,,	तानना	हम	,,	न्हाना
वह	,,	पीसना	जो		छोड़ना
जो	,	गाना	कौन	,,	कतरना
कौन	,,	लाना	वह	,,	चाखना

२:—जेम 'आऊंगा' 'आओगे' 'पकाती हू' वगेरेनी पहेलां 'मैं' 'तुम' वगेरे लागे छे, ते रीते नीचेना शब्दोनी पहेलां लगाडो.

१	हांकते हो	९	खायेंगी
२	काटती हैं	१०	चढ़ेंगे
३.	आती हो	११	चुप होती
४	कब आऊंगी	१२	बीनता हूं
५	खोदेगा	१३	खोदते हो
६	बोयेगी	१४	क्या खाता है ?
७	जाता हू	१५	क्यों चौंकेगी ?
८	लाऊंगा		

३:—नीचेना वाक्योने गुजराती भाषामां लखो:—

१ आजकल रामचद्र बाग में जाता है और बहुत फूल तोडता है
२ तू किसके घर से अनार लाता है वे सब फिर क्या खायेंगी
३. वहा पर कौन पढ़ेगी जहा गुरुजी कभी भी नहीं बैठते.
४ आजकल गन्ना चूसना अच्छा लगता है, बडा मीठा होता है
५ तुम हमारे घर आम कब खाओगे, अभी तो बहुत होते हैं
६ मैं खट्टे आम नहीं खाती, मुझे तो मीठे बहुत अच्छे लगते हैं
७ आम के ऊपर दूध पियेगी तो अच्छी बात होगी

८ रबड़ी और हलुएका बहुत खाना अच्छा नहीं, मैं तो फल खाऊंगा

९ थोडे दिन से मैं बहुत पढता हू क्योंकि अब परीक्षा होगी.

१०. अब बारह बजेंगे, हम आते हैं, कुछ खाना खायेंगे

११ मैं तीन दिन से केवल दूध पीती हूं, दाल, रोटी भात नहीं खाती.

१२ उन के घर की दाल में मसाला बहुत पड़ता है, मुझे अच्छी नहीं लगती

१३ मैना ओर तोता दोनों आमके पेड पर मीठा मीठा बोलते हैं

१४ चीलने उस लड़की के हाथ में से पूरी झपट ली. वह अब रोयेगी

४:—नीचेना वाक्योने हिंदी भाषामां लखो:—

૧ હું હમણાજ દરવાજો ઉઘાડીશ તેઓ તેમા શુ ત્યારેજ પેસી જશે?

૨ તમે નિશાળેથી જ્યારે આવશો, મને ત્યારેજ તેડજો, તો હુ તરત આવીશ

૩ જેને તમે દાડમ આપો છો શુ તે તમને પાછો આપશે તે તમે જાણો છો?

૪ અમે તો હવે પાચ વાગે ઉઠીશુ ને પછી વાડીમા ફરીશુ, તેઓ અમારી જોડે આવશે

૫ એ છોકરાની સોય તમે લેશો નહિ, તે તો તરત રડશે ને બખડા પાડશે, જાણો છો ને

૬ આ ચપ્પુ કોનો છે? જેનો છે તેને આપી દેશે તો સારૂ થશે, તે રડશે નહિ

૭ આ તરફના લોકો શુ ખાય છે? તે તરફના લો દાળ, ભાત રોટલી, કઢી અને ખીચડી ખાય છે

૮ તુ તડકામા કેમ ફરે છે, પેલા ઝાડ નીચે નથી બેસતો, જ્યા સારી ટાઢી છાયા છે

૯ અમારા ઘરમા બિલાડી આવે છે ને રોજ ઘણા ઉંદરાને ખાઇ જાય છે, વળી હજી ખાશે

૧૦ તેઓ હમણાથીજ કોઇપણ ઠેકાણે એકલા જશે ત્યારેજ વહેલા પહોચશે

૧૧ તે છોકરી દીવા (ને) સળગાવે છે, તેથી ધુમાડો થાય છે આ ઘર બહુ ગરમ થશે

૧૨ ના પણ અમે તો આજે અહીજ રહીશુ ને તમારી જોડે મઝાથી ખૂબ રમીશુ, તમે રમશો ને ?

૧૩ તેના ઘરમા કાલે રીંગણા, બટાટાનુ શાક થશે ને સાથે દાળ, ભાત અને શીરો પણ થશે

૧૪ તમારી વાડીમા પપૈયા થાય છે કે નહિ ? મ્હારી વાડીમા તો દ્રાક્ષ પણ

૧૫ તમે આ તરફ શુ જુવો છો ? હુ તમારી કલમ જોતો નથી હુ તો મ્હારી જ લઉ છુ

૧૬ રામચંદ્ર તો ખારેક, બદામ અને અંજીર બહુ ખાય છે નથી તો હુ આપીશ

૧૭ તમે જ્યારે અહીંથી છૂટશો ત્યારે સાથે મને પણ લઇ લેશો કે

૧૮ પેલો ખેડુત ખેતરમાં શુ વાવશે તે તુ જાણે છે ? હા ! ઘઉં વટાણા

૧૯ તેના ઘરમા તો મચ્છર, માંકણ, ચાંચડ બહુ છે અમે તો ત્યા એક પણ દિવસ રહીશુ નહિ

૨૦ મ્હારી ગાયનો વાછરડો બહુ કૂદે છે, ને ઘણો દોડે છે, મને કોઇપણ વખતે મારશે પણ

---

§ हुकम आपवामां बीजा पुरुषमां तू जाना=તું જજે, 'तुम जाना=તમે જજો' एवा पण रूप थाय छे

पाठ २२

पुरुष

आ		ए	
१ मैं गया	= હું ગયો	२ हम गये	= અમે ગયા
३ तू गया	= તું ગયો	४ तुम गये	= તમે ગયા
५ वह गया	= તે ગયો	६ वे (वह) गये	= તેઓ ગયા

(ા)		(ે)	
१ मैं गया था	= હું ગયો હતો	२ हम गये थे	= અમે ગયા હતા
३ तू गया था	= તું ગયો હતો	४ तुम गये थे	= તમે ગયા હતા
५ वह गया था	= તે ગયો હતો	६ वे (वह) गये थे	= તેઓ ગયા હતા

स्त्री

ई	ઈ	ई	ઈ
१ मैं गई	= હું ગઈ	२ हम गईं	= અમે ગઈ (ગયા)
३ तू गई	= તું ગઈ	४ तुम गईं	= તમે ગઈ, „
५ वह गई	= તે ગઈ	६ वे (वह) गईं	= તેઓ ગઈ, „

ई	ઈ	ई	ઈ
१ मैं गई थी	= હું ગઈ હતી	२ हम गई थीं	= અમે ગઈ હતી, (ગયા હતા)
३ तू गई थी	= તું ગઈ હતી	४ तुम गई थीं	= તમે ગઈ હતી, „
५ वह गई थी	= તે ગઈ હતી	६ वे (वह) गई थीं	= તેઓ ગઈ હતી, „

---

‡ एवीज रीते बैठा, बैठे, सोया, सोये, चला, [illegible] झूला, रोया, हँसा, गिरा, पडा, भागा दौड़ा वगेरेमां लगाडी जोवानुं छे.

पाठ २३

पुरुष–स्त्री बन्ने

१ (मैं)—मैंने खाया = (हुं)—मे खाधु

३ (तू)—तूने खाया = (तु)—ते खाधु

५ (वह)—उसने‡ खाया* = (ते)—तेणे खाधु

२ (हम)—हमने खाया = (अमे)—अमोए खाधु

४ (तुम)—तुमने खाया = (तमे)—तमोए खाधु

६ (वे)—उन्होंने खाया = (तेओ)—तेओए खाधु

मैंने खाया§ था = मे खाधु हतु हमने खाया था = अमोए खाधु हतु

तूने खाया था = ते खाधु हतु तुमने खाया था = तमोए खाधु हतु

उसने खाया था = तेणे खाधु हतु उन्होंने खाया था = तेओए खाधु हतु

मैंने खाया है = मे खाधु छे हमने खाया है = अमोए खाधु छे

तूने खाया है = ते खाधु छे तुमने खाया है = तमोए खाधु छे

उसने खाया है = तेणे खाधु छे उन्होंने खाया है = तेमणे खाधु छे

---

‡ जुओ पाठ १५ 'वह'नो उस, उन, वगेरे

* अहीं 'मैं गया' नी माफक 'मैं खाया' वगेरे नथी, ते सकर्मक विषे वधु बीजा भागमां समजाववामां आवशे

§ खाया+था=खाया था एवीज रीते धरा, रक्खा, किया, पिया, लिया, दिया, तोड़ा, डाला, उठाया, मारा, पीटा, वगेरेमां समजी लेवानु छे

पाठ २४

११ ग्यारह*	=	અગ્યાર	३१ इकतीस	=	એકત્રીસ
१२ बारह	=	બાર	३२ बत्तीस	=	બત્રીસ
१३ तेरह	=	તેર	३३ तैंतीस	=	તેત્રીસ
१४ चौदह	=	ચૌદ	३४ चौंतीस	=	ચોત્રીસ
१५ पन्द्रह	=	પંદર	३५ पैंतीस	=	પાત્રીસ
१६ सोलह	=	સોળ	३६ छत्तीस	=	છત્રીસ
१७ सत्रह	=	સત્તર	३७ सैंतीस	=	સાડત્રીસ
१८ अठारह	=	અઢાર	३८ अडतीस	=	આડત્રીસ
१९ उन्नीस	=	ઓગણીસ	३९ उन्तालीस	=	ઓગણચાલીસ
२० बीस	=	વીસ	४० चालीस	=	ચાલીસ
२१ इक्कीस	=	એકવીસ	४१ इकतालीस	=	એકતાલીસ
२२ बाईस	=	બાવીસ	४२ ब्यालीस	=	બેતાલીસ
२३ तेईस	=	તેવીસ	४३ तितालीस	=	તેતાલીસ
२४ चौबीस	=	ચોવીસ	४४ चवालीस	=	ચુવાલીસ
२५ पच्चीस	=	પચ્ચીસ	४५ पैंतालीस	=	પિસ્તાલીસ
२६ छब्बीस	=	છવ્વીસ	४६ छयालीस	=	છેતાલીસ
२७ सत्ताईस	=	સત્તાવીસ	४७ सैंतालीस	=	સુડતાલીસ
२८ अट्ठाईस	=	અઠ્ઠાવીસ	४८ अडतालीस	=	ઉડતાલીસ
२९ उन्तीस	=	ઓગણત્રીસ	४९ उनचास	=	ઓગણપચાસ
३० तीस	=	ત્રીસ	५० पचास	=	પચાસ

* जुओ पाठ आठमो, જેસે तेम અગ્યારે, બારે, અગ્યારમો, બારમો, वगेरे, तेमज ग्यारहो बारहो तेरहो वगेरे, तेमज ग्यारहवाँ बारहवाँ वगैरे

पाठ २५

करके = કરી, કરીને   –०, कर = ઈ, ઇને.

खा =	ખાઇને	खाकर =	ખાઈ
पी कर =	પીને	पीकर =	પી
सो करके =	ઊંઘીને	सोकर =	ઊંઘી
उठ करके =	ઊઠીની	उठकर =	ઊઠી
आ करके =	આવીને	आकर =	આવી

जेमके —

१—मै खा आता हूं = હુ ખાઇ આવુ છુ

२—तू उठकर भागता हे = તુ ઊઠીને ન્હાસે છે

३—वह काम करके‡ जाता है = તે કામ કરીને જાય છે (વગેરે)

ने के लिये, ने को, ने, = વા, વાને, સારૂ, વાને માટે

गाने के लिये =	ગાવાને	देखने को =	જોવા સારૂ
पहिनने को =	પેહેરવાને	टहलने को =	ફરવાને
खोलने =	ઉઘાડવાને	ढूढने को =	ગોધવાને માટે
चूसने को =	ચૂસવાને	भाजने को =	અજવાળના

जेमके —

१—मै कपडा लाने को जाता हू = હુ કાપડ લાવવાને માટે જાઉ છુ

२—मैं कपडा लाने जाता हू = હુ કાપડ લાવવા જાઉ છુ

३—तू खेलने केलिये जाता है = તૂ રમવાને (સારૂ) જાય છે

– शून्यनो अर्थ मूळ धातुनुं अर्ध रूप, खा, पी, दे मार वगेरे

‡ मात्र 'कर' धातुनी ज साथे घणु करीने 'के' आवे छे ते आ दाखलाओ उपरथी समजाई आवशे बीजा धातु साथे तो केवळ 'कर' ज आवे छे.

स्वाध्याय ९.

१:—नीचेना वाक्योने हिंदी भाषामां लखो-

१ તે આજે શુ લાનીને કો ા માટે ત્યા ગયા ?
२ મે તેની પાસેથી અહીં આનીને શુ લીધુ હતુ ?
३ તે છોકરીઓ ખાવા આ તરફ કેમ આવી હતી ?
४ તે જઇને તેના સાર શું કર્યું છે ?
५ અમે બધા જમીને મળવાને માટે આવીશુ
६ હું કાલે દોડીને કહેવા સારૂ આવ્યો હતો
७ પણ તુ રમવાને કેમ આવ્યા ન હતો ?
८ તમે ઘેર મને મળવા માટે ક્યારે આવશો ?
९ હા, અમે વ્હેલા ઉઠીને ન્હાવા માટે ગઇ હતી
१० આજે પેલા છોકરા ફરવા માટે આવ્યા હતા
११ ન્હાની વાછરડી ઘાસ ખાઇને મસ્ત ફરતી હતી
१२ ગાય પાણી પીને ફરી આવી હતી
१३ કાલે ત્હારા ઘેર છોકરીઓ કેમ આવી હતી ?
१४ હુ જાણતો હતો, પણ પછી ભુલી ગયો
१५ રામચદ્ર લખવાને અહીં આવ્યો છે
१६ અમે પણ ભણવા સારુ આવ્યા છીએ
१७ તમે શુ કહી ગયા તે હુ સમજ્યા નહિ
१८ શુ ફરીથી કહેશો ? હા ‘હુ કહેવાને આવ્યો છુ
१९ તેઓ વાડીમા ફૂલ સૂઘી ગયા હતા ?
२० તે મારીને ન્હાસી ગયો. હુ પકડતો હતો

२:—नीचेना अंकोने हिंदी भाषामां अक्षर—लखो-

२२, ११, ३९, ४२, ४८, ६, २, ८४, २१, ६९, ४९,
४५, ३१, १२, १७, १८, १६, ९०, ५, ४५, ९३,

पाठ २६

एक			अनेक		
१ कैसा	=	કેવો, કેવું	कैसे	=	કેવા, કેવાં
कैसी	=	કેવી	कैसी	=	કેવી કેવાં
२ अच्छा	=	સારો સારૂ	अच्छे	=	સારા, સારાં
अच्छी	-	સારી	अच्छी	=	સારી, સારાં
३ बुरा	=	નઠારો નઠારૂ	बुरे	=	નઠારા, નઠારાં
बुरी	=	નઠારી	बुरी	=	નઠારી, નઠારાં

विधान

गुजराती प्रमाणे सारो, सारी, सारु, एम हिंदीमा त्रण जातना शब्दो नथी होता, फकत बेज जातना—'अच्छा' 'अच्छी'—होय छे ते खास ध्यानमा राखवु ‡ एवीज रीते—

ऐसा	=	એવો, વું	तुझसा	=	ત્હારા જેવો, વું
ऐसे	=	એવા, વાં	तुझसे	=	ત્હારા જેવા, વાં
वैसा	=	તેવો, વું	उनसा	=	તેમના જેવો, વું
वैसे	=	તેવા, વાં	उनसे	=	તેમના જેવા, વાં
तैसा	=	તેવો, વું	किनसा	=	કોના જેવો વું
जैसा	=	જેવો, વું	मुझसी	=	મ્હારા જેવી

वगेरेमा समजी लेवानुं छे

‡ गुजरातीमां–पुल्लिंगमां केवो, केवा नपुंसक लिंगमां केवुं, केवां अने स्त्री लिंगमां केवी थाय छे गुजरातीना घणा खरा नपुंसक लिंगना शब्दोनो समावेश हिंदीना पुल्लिंगमां थई जाय छे

पाठ २७

इतना	=	આટલો લુ	उतना	=	તેટલો, લુ
इतने	=	આટલા લા	उतने	=	તેટલા, લા
कितना	=	કેટલો, લુ	जितना	=	જેટલો, લુ
कितने	=	કેટલા, લા	जितने	=	જેટલા, લા
इतनी	=	આટલી, લા	उतनी	=	તેટલી, લા
कितनी	=	કેટલી, લા	जितनी	=	જેટલી લા

दुगुना	=	બમણો, ણુ	अब तक	=	હજી (અત્યાર) સુધી
तिगुना	=	તમણો, ણુ,	कब तक	=	ક્યા (ક્યા) સુધી
चौगुना	=	ચારગણો, ણુ	जब तक	=	જ્યા (જ્યાર) સુધી
पँचगुना	=	પાચગણો, ણુ	तब तक	=	ત્યા (ત્યાર) સુધી
छगुना	=	છગણો ણુ	बारबार	=	વારવાર વખતો વખત
सातगुना	=	સાતગણો ણુ	खुद	=	પોતે, જાત
अठगुना	=	આઠગણો ણુ	अक्सर	=	ઘણુ કરી
नौगुना	=	નવગણો, ણુ	बहुधा		
दसगुना	=	દસગણો ણુ	परसों	=	પરમ દિવસ
दुगुनी	=	બમણી	तरसों	=	આગલા દિવસ
कल	=	કાલે, (આવતી, ગત)	तड़के	=	ફજર
सवेरे	=	સવારે	साझ	=	સાઝે
मानी,यानी	=	એટલે	निदान / आखिर	=	મતલબકે
परस्पर	=	અરસ્પરસ			
आपस	"		सचमुच	=	ખરેખર

झटपट	=	ઝપાટાબંધ ઉતાવળો	बीचाबीच	=	વચ્ચોવચ
			बीच	=	વચ્ચે
पास	=	નજીક	आगे	=	આગળ
दूर	=	દૂર	पीछे	=	પાછળ
जरूर	=	જરૂરથી	नीचे	=	નીચે
जरूरत	–	જરૂર	ऊपर	=	ઉપર
पार	=	પાર	अंदर	=	અંદર
चाहिये	=	જોઈએ	बाहर	=	બહાર
सब जगह	=	બધે	तले	=	તળે
मानो	=	જાણે	बदले	=	બદલામાં
शीघ्र	=	જલદી	बायाँ	=	ડાબો
ज्यों	=	જેમ	दाहिना	=	જમણો
यों	=	એમ	त्यों	=	તેમ

पाठ २८

ना, नी, ने, वाला, ली, ले, = વાનો, નુ, ના, ની, નાર, વાળો.

करना है	=	કરવાનો કરવાનુ છે	जानेवाली है	=	જનાર છે
रखने हैं	=	મૂકવાના છે	आनेवाला है	=	આવવા વાળો છે.
देनी है	=	આપવાની છે	आनेवाले हैं	=	આવનાર છે

---

* जुओ पाठ २६ मां 'विधान' तथा नीचेनी टिप्पणी

विधान

केटलाक प्रसगे—'तुझें करने का है' मुझे खाने का है, उन्हें जानेका है, एवी रीते बोले छे ते ठीक नथी, पण 'तुझे करना है' 'मुझे खाना है' 'उन्हें जाना है' 'मुझे लेनी है' 'तुझे खानी है' एवी रीते बोलवुं जोइए ए सिवाय—

मेरे को, तेरे को, तुम्हारे को, हमारे को वगेरे

जे बोलवामा आवे छे ते पण ठीक नथी ते जग्याए 'मुझे तुझे, तुम्हें, हमें, इसे, उसे इन्हें, उन्हें वगेरे बोलवु जोइए जेमके—

केटलाक अशुद्ध वाक्यो

१ रामचन्द्र ! तेरे को क्या चाहिये ?
२ मेरे को तो आम चाहिये.
३ और तुम्हारे को कहाँ जाने का है ?
४ हमारे को तो बहुत काम करने का है.

उपला शुद्ध वाक्यो

१ रामचद्र ! तुझे (तुझको) क्या चाहिये ?
२ मुझे (मुझ को) तो आम चाहिये
३ और तुम्हें (तुम को) कहाँ जाना है ?
४ हमें (हम को) तो बहुत काम करना है

पाठ २९

पुरुष—स्त्री

१ मैं जाऊ = હું જાઉં	२ हम जावें = અમે જઈએ
३ तू जा,(जावे)= તું જા,(જાય)	४ तुम जाओ = તમે જાઓ.
५ वह जावे = તે જાય	६ वे(वह) जावें = તેઓ જાય

१ मैं देखू = હું જોઉં	२ हम देखें = અમે જોઈએ
३ तू देख(देखे)= તું જો (જુવે)	४ तुम देखो = તમે જુઓ.
५ वह देखे = તે જુએ	६ वे देखें = તેઓ જુએ.

पुरुष

१ मै जाता = હું જાત, જતે	२ हम जाते = અમે જાત, જતે
२ तू जाता = તું જાત ,,	४ तुम जाते = તમે જાત, ,,
५ वह जाता = તે જાત ,,	६ वे(वह)जाते= તેઓ જાત, ,,

स्त्री

मैं जाती = }	हम जातीं = }
तू जाती = } ગુજરાતી અર્થ પુરુષ પ્રમાણે	तुम जातीं = } ગુજરાતી અર્થ પુરુષ પ્રમાણે
वह जाती = }	वे जातीं = }



स्वाध्याय १०

१ः—नीचेना हिंदी वाक्योने गुजराती भाषामां लखो

१ मैं आज खेलने को गया होता तो कैसा अच्छा होता
२. तुझे खेलना होता तो तू जरूर जाता
३. उन्हें ऐसा करना होता तो वे भी जाते
४. इन लडकियों§ को खाना होता तो हमारे घर आतीं.
५ हा, ये गई होती तो तू भी जरूर आया होता, और वे भी आते
६ तुम कहो तो मैं भी जाऊ और वे लडकिया भी जावे
७ नहीं, पहले तुम सब जाओ, हम फिर आयेंगे
८ वह देखो कौन आता है, वह भी जावे तो अच्छा
९ भाई ! तू कुछ लिख पढ, नहीं तो पछतायेगा
१० तुझे जो चाहिये, मुझे कह, वह मैं सब चीजें दुगा
११ हमें कुछ न चाहिये, तुम गये होते, तो हम खुश होते
१२ तुम्हें जो करना है, देना है वह कहो न ! कहते क्यों नहीं ?
१३ मुझे खाना खाना है, कहो तो खाऊ पिऊ ?
१४ तुम्हें अपनी कलम देनी हो तो दो, नहीं तो मत दो
१५ जितनी कलम चाहिये उतनी ले लो, बल्कि, दुगुनी ले लो

---

§ अहीं गुजरातीनी माफक मूळ रूप न रहेतां आगळ प्रत्यय आववाथी दीर्घ 'ई' ने बदले ह्रस्व 'इ' थई जाय छे, जुओ पाठ १४ मो, नारियां, नारियोंने' वगेरे

२:—नीचेना गुजराती वाक्योने हिंदी भाषामां लखो.

૧ તમે કાલે અહી હોત તો કેવુ સારૂ થાત

૨ જો તમારે કરવાનુજ હોત તો તમે કેમ ન કરત

૩ જેટલુ જોઇએ, તેટલુ મ્હારી પાસેથી લઇ લે, ત્યા ન જા

૪ તેમને લાવવાનુ હોત તો તો તેઓ કેમ ન લાવત

૫ તમે બધા ગયા હોત તો તે પણ આવત, હવે તમે જલદી જાઓ

૬ તુ પણ જા, અમે પછીથી ત્યા આવીશુ ત્હારા માટે ફળો લાવીશુ

૭ જુઓ આ એક ન્હાની બિલાડી ઉંદરને પકડે છે કેવી દોડે છે

૮ તે કેવા રડતો રડતો આવે છે મે કહ્યુ હતુ કે તુ હવે ન જા

૯ તમારે આજે ક્યા જવાનુ છે ને ક્યા રમવાનુ છે તે કહો !

૧૦ હા, હુ કહીશ કે તમે બધા બહુ નકારા એટલે ખરાબ છોકરા છો.

૧૧ તુ જો ન આવ્યો હોત તો હુ કહેત કે તુ પણ ત્યાથી ચાલ્યો જા

૧૨ છોકરીઓ ! તમે ભણવા માટ ક્યારે આવશો, તે કહો

૧૩ અમારે એક કલમ, એક ખડીઓ ને એક ચોપડી જોઇએ

૧૪ તે છોકરીઓ આજે શાળામા ન ગઇ હોત તો ગુરુજી શુ કહેત ?

૧૫ મ્હારે અહીં રહેવુ છે અને કેટલાક કામ કરવાના છે

૧૬ તમે કહો તો હુ જાઉ કેમકે આજે ઘેર કોઇ નથી

૧૭ કાલે રામચંદ્રને ત્યા જવાનુ છે કોઇ તેડવા પણ આવશે

૧ મ્હારે ત્યાથી એક ચોપડી લાવવાની છે તે ભણવા માટે માગી છે.



स्वाध्याय ११

*गाँव की बिल्लियाँ बहुधा कस्बों तथा शहरोंकी बिल्लियों से अधिक डरावनी होती हैं, वे केवल मूसों (चूहों) के लिये ही भयानक नहीं होतीं, बल्कि चिड़ियों, खरहों तथा गिलहरियों के लिये भी उसी प्रकार भयानक होती हैं जो लोग गाँवों में रहते हैं उन्होने अक्सर देखा होगा कि गाँवो की बिल्लियाँ छोटे कुत्तों को तो कुछ गिनती ही नहीं मामूली कुत्ते तो उनके सामने दुम दबा कर भाग जाते हैं

एक दिन एक बड़ी मोटी ताज़ी बिल्ली बेल के पेड पर चढ गई और ऊपर से एक गिलहरी पकड लाई गिलहरी की गरदन से खून निकल रहा था, लेकिन उसमें थोडी जान बाकी थी बिल्ली उसे जमीन पर रख कर उस से थोडी दूर पर बैठ गई, और उसी ओर बराबर ताकने लगी. वह बार बार अपनी पूँछ को इधर उधर जमीन पर पटकती थी और जब वह अधमरी गिलहरी उठने की कोशिश करती उसी समय उस पर पंजा रख देती थी जिस समय वह बिल्ली अपने भोजन का प्रबध कर रही थी सुरेशजी वहा जा पहुंचे, सुरेश की उम्र इस समय तीन वर्ष की थी गिलहरी के देखते ही सुरेश की इच्छा उसे उठा लेने की हुई यह बिना सोचे ही–कि बिल्ली कहीं मुझपर आक्रमण न करे वे आगे बढने लगे, उनको आगे बढ़ते देख कर बिल्लीने [illegible]

---

* स्वाध्याय ११ थी मांडीने ते अत सुधीना गद्य पद्यने भाषांतर कर्या पहेलां एकथी वधु वखत स्पष्ट वांचवानु राखवु शाळामां तो वांचतां म्होडेज तरजुमा करवो

गुर्राना शुरू किया परन्तु सुरेश ने निर्भय हो कर गिलहरी को उठा लिया ज्यों ही वे उसे उठा कर चलने लगे त्यों ही बिल्लीने बड़ी भयंकरता से उन पर हमला किया उसे आता देखकर और उसके पंजों की चोट के डर से वे भाग न गये. बल्कि उन्होंने उस बिल्ली का मुकाबला लातों तथा मुक्कों से किया लगभग आध-घंटे तक उनका युद्ध होता रहा, अंत में एक आदमी वहाँ आ निकला उसने इन को खून से भरा हुआ देखकर उठा लिया और बिल्ली को भगा दिया सुरेश के घाव एक महीने में अच्छे हुए.

गाँव=ગામડુ	मोटी ताज़ी=જાડી લટ્ટુ	आक्रमण=હુમલો
डरावनी=બીહામણી	मक्खन=ડોક	लगभग=આસરે
मूसों के लिये=ઉંદરો માટે	जान=જીવ	आ निकला=આવી પ-હોચ્યો
खरहा=સસલુ	कोशिश=કોશેશ	
उसी प्रकार=તેજ રીતે	सुरेश=એક વીર બાલકનુ નામ	घाव=ઘા
दुम=પુછડી		गुर्राना=ઘુરકવુ

એક દિવસે બપોરે[1] હુ નદીને કિનારે લીલા[2] ઘાસ ઉપર બેઠો હતો, તે સમયે મે એક ગાયને પોતાના[3] વાછરડા સાથે ચરતી જોઈ જ્યાર તે વાછરડુ ચરતું ચરતુ[4] પોતાની માથી જરા વેગળે જતુ અથવા ઘાસની મસ્તી[5] કરતુ કુદતુ દુર જતુ તે વખતે તેની માતા અધીર થઈ જતી અને અતિશય પ્રેમ વડે[6] પોતાના બાળક સ્હામુ જોતી, તેમજ મમતા ભરેલા અવાજવડે વાછરડાને બોલાવતી હતી

१=दुपहर, २=हरे, ३=अपने, ४=चरता चरता, ५=खेल, शरारत, ६=द्वारा, से

स्वाध्याय १२

जब सुरेश ११ ही वर्षके थे, उनको अकेले कलकत्ते से नाथपुर की यात्रा करनी पडी। इनकी शैतानियाँ अभी कुछ भी कम न हुई थीं। ये कभी घर पर न रहते, सदैव इधर उधर खेला कूदा और उत्पात मचाया करते थे। जब वे नाथपुर जा रहे थे, उन्हे मार्गमें एक बडा भारी आमका वृक्ष मिला। उन्होंने उस पर एक घोंसला देखकर तुरन्त उसके लेनेके लिये चढना आरम्भ कर दिया। घोंसलेके पास पहुँचे ही थे कि पीछेसे किसी जानवरके फुसकारनेकी आवाज आई। उन्होंने पीछे फिर कर देखा। जो भयकर वस्तु उन्हें दीख पडी, उससे किसी बालकके तो क्या, बडे बडे आदमियोंतकके छक्के छूट जाते। उन्हें अपने नीचे एक बडा काला साप दीख पडा। पर वे इससे डरे नहीं।

क्रोधसे भरा हुआ सर्प उनकी राह पर ही था, इस लिये उनका नीचे उतरना लगभग असभव ही हो गया था। तुरत सर्पकी ओरसे मुँह फेर लिया और धीरे धीरे नीचे उतरनेका विचार किया, जिससे वे उस सर्पसे दूर होकर उतर जावे। ऐसा करने पर भी उस सर्पसे बचना अत्यन्त कठिन था। और न वे, एक साथ डाल परसे उछल कर, उस खोखलेके ऊपरसे, जिसमें वह सर्प था, कूद ही सकते थे, क्योंकि ऐसा करना बहुत मुश्किल था। अब न तो वे नीचे ही उतर सकते थे, क्योंकि जितने नीचे वे उतरते उतने ही वे साँपके पास आते जाते थे, और न ऊपरकी शाखा पर जा सकते थे, क्योंकि वह बिल्कुल पतली थी। इन सब बातोंपर ध्यान करके सुरेशने अन्तमें जी-

बन-युद्धके हेतु नीचे उतरना ही आरम्भ कर दिया। साँप भी अपनी शिकारको पास आता देख फन उठाकर तैयार हो गया। थोड़ी देर रुककर उसने उनकी जघापर काटनेकी इच्छासे फन मारा। दैवयोगसे फन उनकी जाघमें न लगकर वृक्षकी शाखा पर पड़ा। वह साँप अपना फन वहाँसे उठानेवाला ही था कि वीर सुरेशका बायाँ हाथ ठीक उसके फन पर जा पड़ा। उन्होंने उसके सिरको खूब जोरसे मुट्ठीमे पकड़ लिया। प्राय बगाली बालक हरवक्त एक चाकू अपने पास रखते हैं। उन्होने भी जेबमें एक चाकू रक्खा था। उन्होंने तुरन्त उसे दाहिने हाथसे निकाल लिया और दाँतसे खोलकर वे भुजामें लपटे हुए साँपको काटने लगे। चालीस पचास सेकण्डमें उन्होंने साँपका सिर काट कर जमीन पर फेंक दिया। ऐसी भयंकर घटनाके बाद फिर ऊपर चढ़नेकी हिम्मत शायद ही कोई बालक करता। परन्तु सुरेश ठीक घोंसले तक जा पहुँचे और चिड़ियोंके बच्चोंको निकाल लाये। उतरते समय उन्होंने उस खोखलेमेसे उस साँपको भी निकाल कर नीचे फेंक दिया। साँपकी लम्बाई ६ फीट और पेटकी चौड़ाई ६ इंच थी उस साँपको और चिड़ियोंके बच्चोंको वे जयचिह्नके समान अपने पिताके पास ले गये। ऐसी घटनाओंसे उनके सब कुटुम्बियोंको प्रतीत हो गया था कि सुरेश अवश्य ही किसी न किसी दिन अपनी जान खोदेगा।

शैतानियाँ=મસ્તીઓ

सदव=હમેશ

उत्पात=તોફાન

घोसला=માળો

फुसकारना=ફુંફાડવુ

जघा
जाँघ } =જાંઘ

छक्के छूटना=હદ ઉપરાંતની ગભરામણ

खोखला=બખોલ

पतली=પાતળી

रुककर=અટકીને

दैवयोग=સંજોગ

उठानेवाला ही था=તૈયારીમા હતો

लपटे हुए=વીંટાએલા

घटना=બનાવ

लम्बाई=લંબાણ

चौडाई=પહોળાણ

इंच=તસુ

प्रतीत=ખાત્રી, માલુમ

खो देगा=ગુમાવશે

पाठ ३०

पुरुष

मै गया होऊगा	= હુ ગયો હઈશ	हम गये होयँगे	= અમે ગયા હઈશુ
तू गया हो(ये)गा	= તુ ગયો હશે	तुम गये होओगे	= તમે ગયા હશો
वह गया हो(ये)गा	= તે ગયો હશે	व गये होयँगे	= તેઓ ગયા હશે

स्त्री

मैं गई होउगी	= હુ ગઈ હઈશ	हम गई होयँगी	= અમે ગયા(ઈ)હઈશુ
तू गई होयेगी	= તુ ગઈ હશે	तुम गई होओगी	= તમે ગયા(ઈ)હશો
वह गई होयेगी	= તે ગઈ હશે	वे गई होयँगी	= તેઓ ગયા(ઈ)હશે

मैं गया हू	हम गये हैं	मैं गई हू	हम गई है
तू गया है.	तुम गये हो	तू गई है	तुम गई हो
वह गया है	वे गये हैं	वह गई है	वे गई हैं *

---

* आ पाठना वाक्लाओना भाषांतर माटे स्वाध्याय ९ नी माफक शिक्षकोए थोडाक गुजराती वाक्यो घडी काढी विद्यार्थीओने आपवा

पाठ ३१

करता रहना	करने लगना
करता रहता है = કરતો રહે છે	करने लगता है = કરવા લાગે છે
,, = કર્યા કરે છે	खाने लगती है = ખાવા માંડે છે
आते रहते हैं = આવ્યા કરે છે	देखने लगती हो = જોવા લાગો છો
सोती रहती हैं = ઉંઘ્યા કરે છે	पढ़ने लगते हैं = વાંચવા માંડે છે

मै कर रहा था
त कर रह था
यह कर रहा था
} = કરતો હતો

हम कर रहे थे
तुम कर रहे थे
वे कर रहे थे
} = કરતા હતા

किया गया है = કરવામાં આવ્યુ છે

*पकड़ा गया है = પકડવામાં આવ્યો છે
निकाल दी गई है = કાઢી મૂકવામાં આવી છે
रख दिये गये है = મુકવામાં આવ્યા છે
‡क्या करना चाहते हो? = શું કરવા માગો (ચાહો) છો ?
कहा जाना चाहती है? = ક્યાં જવા માગે (ચાહે) છે ?

अशुद्ध	शुद्ध
१. मैंने जाना है	१ मुझे जाना है = મ્હારે જવું છે
२ हमने खाना है .	२ हमे खाना है = અમારે ખાવું છે
३ उन्होंने करना है	३. उन्हें करना है = તેમને કરવાનું છે

---

* 'पकड़ने मे आया है' एम बोलवानी पद्धति विशेष नथी.

‡ क्या करनेको मांगते है 'क्या करना मांगते हो' एवा अशुद्ध प्रयोग करवा नहीं तेमज 'तुम' नी जग्याए 'आप' प्रयोग थतां 'आप करते हो' एम न बोलतां 'आप करते हैं' 'आप जायेंगे' वगेरे बोलवुं — एमज तुझे, तुम्हें उसे, किसे, वगेरे, जुओ पृष्ठ ५८.

ए = લો, લુ, લી, લા, લાં.

‡गया हुआ	=	ગયેલો	किया हुआ	=	કરેલુ
आये हुए	=	આવેલા	गई हुई	=	ગયેલી
खाई हुई	=	ખાધેલી	किये हुए	=	કરેલા

पाठ ३२

५१ इक्कावन	=	એકાવન	७६ छहत्तर	=	છોતેર
५२ बावन	=	બાવન	७७ सतहत्तर	=	સીતોતેર
५३ त्रेपन	=	ત્રેપન	७८ अठहत्तर	=	ઇઠોતેર
५४ चौअन	=	ચોપન	७९ उनासी	=	ઓગનાએંસી
५५ पचपन	=	પચાવન	८० अस्सी	=	એંસી
५६ छप्पन	=	છપન	८१ इक्यासी	=	એક્યાસી
५७ सत्तावन	=	સત્તાવન	८२ ब्यासी	=	બયાસી
५८ अट्ठावन	=	અઠાવન	८३ त्यासी	=	ત્યાસી
५९ उनसठ	=	ઓગણસાઠ	८४ चौरासी	=	ચોર્યાસી
६० साठ	=	સાઠ	८५ पचासी	=	પંચાસી
६१ इकसठ	=	એકસઠ	८६ छयासी	=	છાસી
६२ बासठ	=	બાસઠ	८७ सतासी	=	સિતાસી
६३ त्रेसठ	=	ત્રેસઠ	८८ अठासी	=	ઇઠાસી
६४ चौंसठ	=	ચોસઠ	८९ नवासी	=	નેવ્યાસી
६५ पैंसठ	=	પાંસઠ	९० नब्बे	=	નેવુ
६६ छयासठ	=	છાસઠ	९१ इक्यानवे	=	એકાણુ

‡ केटलाक लोको अजाण्यामां 'गयेली' 'गयेला' 'आयेले' वगेरे अशुद्ध प्रयोग करे छे

६७ सड़सठ	=	સડસટ	९२ बानवे	=	બાણુ
६८ अडसठ	=	અડસટ	९३ त्र्यानवे	=	ત્રાણુ
६९ उनहत्तर	=	અગનોસીત્તેર	९४ चौरानवे	=	ચોરાણુ
७० सत्तर	=	સીત્તેર	९५ पचानवे	=	પચાણુ
७१ इकहत्तर	=	એકોતેર	९६ छ्यानवे	=	છન્નુ
७२ बहत्तर	=	બોતેર	९७ सतानवे	=	સત્તાણુ
७३ तिहत्तर	=	તોતેર	९८ अठानवे	=	અટ્ઠાણુ
७४ चौहत्तर	=	ચુમોતેર	९९ निन्नयानवे	=	નવ્વાણુ
७५ पचहत्तर	=	પચોતેર	१०० सौ	=	સો

पाठ ३३

करती करती = કરતી કરતી
करती हुई (हुई) = ,,
करता करता = કરતો કરતો
करता हुआ = ,,
करते हुए = કરતા કરતા

} = કરતા કરતાં* = **करते करते**

मैं अपना § = હું મારૂં,× **हम अपना** = અમે અમારૂ–આપણે આપણુ
तू अपना = તૂં તારૂં, **तुम अपना** = તમે તમારૂં = **आप अपना**=
वह अपना = તે તેનુ **वे अपना** = તેઓ તેમનુ [આપ આપનુ
नथापि, तोभी, = તથાપિ છતા છતાંપણ **नेपर भी** = છતા

उदाहरण-

(करते करते) करती करती थक गई = (કરતા કરતા) કરતી કરતી થાકી ગઇ

---

* एपज, ખાતા, પીતા, જતા, = खाते, पीते, जाते, वगेरे
§ पुल्लिंग सब जो वस्तु अनेक होय तो 'अपने'
× 'पोताञु' 'पोतानां' पम थाय, पग विशेष प्रचार नथी.

(चढ़ते चढ़ते) चढती हुई गिर पडी = (ચઢતા ચઢતા) ચઢતી પડી ગઈ.
(खाते खाते) खाता खाता सो गया = (ખાતા ખાતા) ખાતો ખાતો ઉંઘી ગયો
(चलते चलते) चलता हुआ बैठ गया = (ચાલતા ચાલતા) ચાલતો બેસી ગયો
(„ „) चलते हुए बैठ गये = („) ચાલતા બેસી ગયા
आज तो मै अपना ही काम करूगा = આજે તો હુ મ્હારૂજ કામ કરીશ.
हम अपनी ही सुनाते थे = અમે અમારી (પોતાની)જ સભળાવતા હતા
तू अपना ही काम करता रहता है = તુ ત્હારૂ જ કામ કર્યા કરે છે
तुम अपने घर क्यों नही जाते ? = તમે તમારા ઘેર કેમ નથી જતા ?
वह अपनी ही बडाई मारता रहता है = તે તેનાજ વખાણ કર્યા કરે છે
वे अपनी तारीफ नहीं करते = તેઓ તેમના (પોતાના) વખાણ કરતા નથી.
तो भी वह नाराज रहता है = છતા પણ તે નારાજ રહે છે
कहने पर भी नहीं सुनता = કહ્યા છતા સાભળતો નથી

स्वाध्याय १२

વિષ્ણુ પોતાની માને કહેવા લાગ્યો, [1]મા ! બાપા કમળા અને ચદ્ર-ભાનુને લઈને ગયા છે તે ક્યા હશે ? શુ કરતા હશે ! કમળા શુ ખાતી હશે ? ક્યા સુતી હશે ? ત્યા ખાટલો હશે ? બને ત્યા રમતા હશે ખરા ? બા ! ચદ્ર તો રડ્યા કરતો હશે તે શા માટે ગયેલો છે કમળા પણ [2]અમથીજ ગયેલી છે મને મોકલ્યો હોત તો બહુ મજા પડત માએ કહ્યુ ભાઈ તે તો તે વખતે કહ્યુ જ નહિ કે હુ જનાર છુ કમળાએ તો 'મ્હારે જવાનુ છે' એમ ચોખ્ખુ કહેલુ ચંદ્રે પણ કહ્યુ કે 'મ્હારે પણ જવુ છે'. ત્હારા બાપાએ મુબઈથી કાગળમા લખ્યુ છે કે 'વિષ્ણુ શુ કર્યા કરે છે, [3]આખો

---

१ माता माटे संबोधन, २ व्यर्थ, ३ दिनभर, ४ ऊधम, ५ એ=भी

દિવસ રમ્યા જ કરતો હશે,' ભાઈ! પેલા છોકરા કેમ આવ્યા કરે છે? કાલે તમે બધા મેડે શુ કરી ગયા હતા? હવે તેઓ આવે તો કહેજે કે 'તમે તમારા ઘેર જાઓ અહીં કામ કરવાનુ છે હા' બોલ હુ તારા બાપાને શુ લખી દઉં? તુ કાલે વાંચ્યા કરતી હતી ત્યારે તુ કેટલી જમરતી કરી ગયો હતો? આજે તને પકડવામા આવ્યો છે એમ ને લખ, ચંદ્ર કેવો સવારમાજ ભણવા લાગે છે કમળા તો ત્યાંએ ભણતી હશે તને એથીજ મોકલવામા આવ્યો નહિ ને હુ તને ફરી પણ કેમ મોકલવાની? કમળા અહીં પણ મ્હારી જોડે કામ કરવા મડતી હતી, જાણે છે ને? તારા બાપાને દરરોજ પૂછતી કે બાપા આજે આપ મને શુ લખવા મારૂ કરો છો? આપ મને જોડે નઇ જશો તો હુ ત્યા પણ બહુ રમનાર નથી' જો તુ થોડી વાર પણ એમીને ભણે તો તને પેંડા આપવાની છુ નહિ તો તને ઘેરથીપએ કાઢી મુકવામા આવશે તારા બાપા બહુ ચીજો લાવવાના છે મ્હારે પરમ દિવસે પુરીઓ કરવી છે એ બધુ તને ભણે તો જ મળે ને! એ સાભળી વિષ્ણુ જરા ખુશ થઇને વાચવા બેસી ગયો

स्वाध्याय १४

उन्हें नावमें चढकर इधर उधर घूमने का शौक बहुत था. एक दिन वे दोपहर के समय नाव पर चढकर इरावती नदी के किनारे किनारे अपनी नाव खेने लगे. ज्योंही सन्ध्या होने लगी त्योंही उन्होंने नाव को किनारे पर बाँध कर घर तक टहलते हुए जाने का निश्चय किया, वे निडर हो कर धीमे धीमे चलने लगे, उनके पास उस समय कोई भी हथियार न था। यहाँ तक कि एक रूलरके अतिरिक्त हाथमें एक छोटीसी छडी भी न थी। सुरेश अपनी बर्तमान दशा पर विचार करते हुए घरको आ रहे थे। राहमें उनको दो किसानोंके अतिरिक्त और कोई न मिला। जब सुरेश एक अँधेरी गलीसे जा रहे थे, उनको एक ऐसा शब्द

सुनाई पड़ा कि जैसे किसीने उनकी ओर पत्थर फेंका हो। परन्तु वृक्षमें लगनेसे उन्हें मालूम हो गया कि वह पत्थर नहीं वरन् किसी डाकूकी फेंकी हुई एक प्रकारकी छोटी बर्छी थी। वे थोडी दूर ही आगे बढे होंगे कि किसीने फिर वही हथियार फेंक कर मारा, परन्तु ईश्वरकी कृपासे दोनों चोटें निष्फल ही हुई। शीघ्र ही सुरेशका दो मनुष्य अपने पर आक्रमण करते हुए दिखाई पडे। सुरेशको अब अपने मित्रकी चेतावनीकी याद पूरी तरहसे आगई। अब उन्हें अपनी रक्षाकी कोई आशा न थी। अन्तमें यह विचार करके कि अगर मरना है तो वीरता के साथ ही क्यों न मरें, वे दो तीन कदम पीछे हटकर और फुटरूलर अच्छी तरह हाथमें पकडकर, खडे हो गये, और दांत पीस पीस कर अपने शत्रुओंकी प्रतीक्षा करने लगे। इनको बहुत छोटा समझकर उनमेंसे एकहीने पहले आक्रमण किया। सुरेश उनकी मरम्मत करनेके लिये तय्यार थे। वह डाकू पास आया ही था कि सुरेशने तान कर खोपडेमें रूलर जमा ही दिया। उसके लगते ही वह पृथ्वी पर गिर पडा। अपने साथीकी यह दशा देखकर दूसरे डाकूसे न रहा गया। उसने फुर्तीसे आक्रमण कर सुरेशके हाथसे रूलर गिरा दिया। अब क्या था, दोनों निहत्थे थे दोनोंमें कुश्ती होने लगी। थोडी देरमें ही सुरेशको पता लग गया कि इस डाकूसे मल्लयुद्धमें जीतना सर्वथा असम्भव है। सुरेश पृथ्वी पर गिरनेवाले थे कि उधरसे एक बारात आ निकली। यह अच्छा मौका पाकर सुरेशने सहायताके लिये जोरसे चिल्लाना शुरू किया। डाकू यह सोचकर कि शायद बचनेका मौका न मिले सुरेशको छोडकर भाग गया। इसी समय वहां कुछ लोग पहुँच गये और उन्होंने सुरेशको बचा लिया।

कदम=ડગલા	**मौका**=તક	**किसान**=ખેડુત
नाव=હોડી	**अतिरिक्त**=સિવાય	**मरम्मत**=સુધારો,, ઠીક કરવું
दोपहर=બપોર	**वरन**=પણ, કિંતુ	**फुर्ती**=ઝડપ
किनारे किनारे=કાંઠે કાંઠે	**डाकू**=લૂંટારૂ	**निहत्थे**=શસ્ત્ર વગરના
खेना=હંકારવું	**बर्छी**=ભાલા જેવો શસ્ત્ર	**बारात**=જાન
चेतावनी=ચેતવણી	**प्रतीक्षा**=વાટ જોવી	**चिल्लाना**=બૂમ, ચીસ પાડવી

स्वाध्याय १५

જાઓ તમારા રાજ્યમાં પાછા ચાલ્યા જાઓ અને વધુમાં કહું છું તે સાંભળો—કદિ પણ દુર્બલના ઉપર અત્યાચાર **ના કરતા** વમ. **કરતા નહીં** કેટલાય મ્હોટા તમે કેમ ન હો પણ એટલું યાદ રાખજો કે તમારાથી મ્હોટા પણ આ સંસારમાં છે કદાચ ન પણ હોય તોય પ્રકૃતિ તો તમારા કરતા સ્વેચ્છાચારી અત્યાચારને કદી સહેશે નહિ તમે પણ દુનિયાના આ નિયમના દાસ છો

ના તું ક્ષત્રિય બાલક છે તેને આજ છાજે છે—દેશને માટે જીવન અને દેશહિત કાજે મૃત્યુ—એ તો ક્ષત્રિયનું, વીરનું કર્તવ્ય છે—ધર્મ છે તને તો આજ ગમે છે હું પણ અન્તકાલે આવી ગયા પ્રાણ ફરી આમ સુઇ ગયો હોઉં એ ઇચ્છા ખુલ્લા નીલ આકાશની નીચે સમર ક્ષેત્રમાં આવી—અન્તિમ શય્યા બીછી હોય, સ્હામે મૃત્યુનો રક્તસાગર ઉછળતો હોય, એના શબ્દ સંભળાતા હોય અને ચારે દિશામાં સમર કોલાહલ **મચી રહ્યો** હોય

આ તો તમને છાજે એવું બોલ્યા સાંભળો, હું માઇને પણ એની ઇચ્છા **વિરૂદ્ધ નથી** બોલાવતી જો કોઇને પણ પોતાની જન્મભૂમિનો કાંઇ **ખ્યાલ હોય** કોઇને પોતાના ધર્મ પર ભક્તિ હોઈ જે કોઈ સ્વાધીનતા **માટે પ્રાણ** આપવા તૈયાર હોય, તો તેજ ચાલ્યા આવે એવો એક પણ વીર સોની બરાબર છે કાચા દિલના, ભ્રમિત ચિત્તના, માણસો મ્હારે

જોઇતા નથી મ્હારે તો એકાગ્ર, દઢ પ્રતિજ્ઞાવાળા માણસો જોઇએ છે. એ માર્ગ છે, પસદ કરી લો—એક તરફ વિલાસ, આમોદ, આરામ અને ભોગ છે, જ્યારે બીજી તરફ મહેનત, અનાહાર, દારિદ્રય અને દુ ખ છે આ તરફ સમાર, વગબાગ અને શાન્તિ છ, જ્યાગ બીજી બાજુએ દેશ—પ્રતિનુ કર્ત્તવ્ય ખડુ છે—પસન્દ કરી લો

મનુષ્યના પ્રારબ્ધ નિર્માણને માટ ભૂમિ એ સર્વોત્કૃષ્ટ નસ્ત્ર છે કારણ કે જન્મસ્થાન સાધારણ રીતે તે ભૂમિના કાર્ય સમ્થાઓ, આદર્શ અને જીવન હેતુઓને સ્વભૂમિજનિત બધુઓ સાથે સગઠિત કરે છે

એ તો શ્રીમગ્વરે કેટલીય વાર કહેવામા આવ્યુ છે "માત્ર કાર્યમાજ ત્હારો અધિકાર છે" જે એક વ્યકિતને માટે સત્ય છે તે સમસ્ત જાતિને માટે પણ પોતાની માતૃભૂમિના સમસ્ત કાર્ય દેશવાસીઓએ જાતેજ કરવા જોઇએ આ એમનો વશપરપગનો વારસો છે આ દૃષ્ટિબિન્દુથી વિચાર કરતા પ્રત્યેક વ્યકિતનુ અસ્તિત્વ નામ શેષ માત્ર, કે કોઇ કુટુમ્બના, એકાદ સઘના, કોઇ એકાદ સપ્રદાયના અશ રૂપેજ નથી કિન્તુ બરાબર સ્હમજવુ જોઇએ કે પ્રત્યેક વ્યક્તિ એક મહાજાતિનુ સદૈવ મુક્ત એવુ એક વિશિષ્ટ અગ છે આથી કરીને પ્રત્યેકે મહાચિંતાશીન અને કર્મા બનવાનુ છે

१, न करना ! २ न करना !

—*—

*स्वाध्याय १६

१-थोडाक वाक्यो लखी लाववा जेमाँ पाठ २२, २३, २९ प्रमाणेना बध दाखला आवी जाय, तेमा पाठ ६, १८, २०-२७ माथी पण मदद लीधेली होवी जोइए

* स्वाध्याय ७मानी पद्धतिए पाठ २२, २३ माँथी अने स्वाध्याय ८मानी पद्धतिए पाठ २९-३० माँथी शिक्षकोए प्रश्नो गोठवी विद्यार्थीओने पूछवा स्वाध्याय माटे वखत जरूर प्रमाणे लगाडवो

२-थोडाक एवा वाक्यो बनाववा जेमा पाठ २५, २८ प्रमाणेना द। खला आवी जाय, तेमा पाठ ७-९-११-१९-२१ माथी पण मदद लीधेली होवी जोइए

३-स्वाध्याय ११, १२ १३, १४ माथी पाठ २५, २८, ३० ३१, ३३ प्रमाणेना थोडाक दाखलावाक्यो लखी लाववा

४-पाठ २८ ना विधान प्रमाणे शुद्धाशुद्ध प्रयोगना नवा दाखला आपवा

५-पाठ ३१ प्रमाणेना बीजा अशुद्ध वाक्योना दाखला समजावी बताववा

६-पाठ ३३ ना आधारे उदाहरण दीठ त्रण त्रण नवा मोटा उदाहरण लखी लाववा

सरलपद्य

चूरन खाते यडिटर जात । जिनके पेट पचै नहिं बात ॥
चूरन अमला वाले खावें । दूनी रिश्वत तुरत पचावें ॥
चूरन पूलिस वाले खाते । सब कानून हजम कर जाते ॥
चूरन सभी महाजन खाते । जिससे जमा हजम कर जाते ॥

(श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत प्रहसनसे)

नीरस वक्ता जी ! सुनो, बैठ रहो १गहि मौन ।
कनफोड़ा २घड़ियाल की, ठनक सहेगा कौन ? ॥१॥

१गुण बिन पुजे न लोक में, ३बडकुलियों की ४पाँति,
कौन भजे वसुदेव को, वासुदेव की ५भाँति ? ॥२॥
'मै मै' 'तू तू' ने किया, आपस में मत भेद।
'हम' का सदा प्रयोग कर, कभी न उपजे खेद ॥३॥
(नारायणप्रसाद बेताब)

पराधीनता दुख महा, सुख जग में स्वाधीन।
सुखी रहत शुक बन विषैं, कनक-पींजरे दीन ॥
(दृष्टांत तरंगिणी)

[1]दामिनि दमकि रही घन माही, खलकी प्रीति यथा [2]थिर नाहीं १
बूँद [3]अघात सहैं गिरि कैसे, खल के वचन सत सह जैसे २
(तुलसीदास)

क्षमा खड्ग लीन्हे रहे, खल को कहा बसाय।
[4]अगिन परो तृन रहित थल, [5]आपहिं ते [6]बुझ जाय ॥
(श्रीलाल)

सबहि भूमि गोपाल की जामें अटक कहा।
जाके मन मे अटक है सोई अटक रहा ॥

लोक अनुग्रह सों§ नृपति, सदा समृद्ध लखाय।
रजधानी तहि भूप की, फूलौ फलौ [7]अघाय ॥
(फुटकर)

---

१ धारण करीने, २ घट, ३ मोटा कुलीन, ४ पाक्तमां, ५ पेठे
१ વીજળી, ૨ સ્થિર, ૩ પ્રહાર, ? નશની વાત, ૪ અગ્નિ, ૫ પોતે, ૬ હોળવાઇ જાય, ૭ ધરાય, [ટાક જુવા છે
§ सों=से=थी जुना पद्यनी भाषाना प्रत्ययो वगेरेना नियमो थो-

भारत तनु

भारत तनु में हैं विविध प्रन्त निवासी अग।
पजाबी सिंधी सुजन महाराष्ट्र तैलग ॥
महाराष्ट्र तैलग वग देशीय बिहारी।
हिंदुस्तानी मध्य हिंद जन वृन्द बरारी ॥
गुजराती उत्कली आदि देशी सेवारत।
सभी लोग है अग बना है जिनसे भारत ॥

(देवीप्रसाद पूर्ण)

भारत लक्ष्मी

*अयि भुवन मनोमोहिनी!
अयि निर्मल-सूर्य-करोज्वल-धरणि!
जनक जननी जननि
नील सिंधु जल-धौ ण तल, अनिल विकम्पित श्याम
अबर चुंबि ल शुभ्र-तुषार किरी

प्रथम प्र गगने, प्रथम
प्रथम भवने

चिर कल
जान्हवी-यमुना-

---

* कवीन्द्र रवीन्द्रनी
गुजराती साथे केटलीबधी
सहोदरता

भारत आरती

[१]

जय भारत, जय भारत
जय मम प्राण-पते
जय संसार - शिरोमणि,
करुणाऽऽगार-मते

[२]

जय जय तीस-कोटि-जन-
प्रतिपालन-कर्त्ता
अगनित कोटि चराऽचर-
भर्त्ता, दुख-ह

[३]

भाल - विशाल-चमत्कृत
सित हिम-गिरि राजै
परसत बाल प्रभाकर
हेम-प्रभा भ्राजै

[४]

ऋषि-मुनि-पुण्य-तपोनिधि
तेज-पुञ्ज-धारी
सब विधि अधम-अविद्या-
भव-भ्रम-तम-हारी

[५]

पैख,

विल

रिनि

[८]

जल, सु-व्योम, सु-शरिद
सु-विमल-जल सरिता
पवन, अवनि मनोहर,
बल-वैभव-भरिता

[९]

जय जय विश्व-विद्रावर
जय विश्रुत-नामी
जय जय धर्म धुरधर
जय श्रुति-पथ-गामी

[१०]

अजित अजेय, अलौकिक,
अतुलित-बल-धामा
पूरन-प्रेम-पयोनिधि,
शुभ-गुन-गन-ग्रामा

[११]

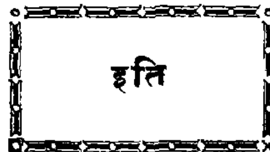
हे प्रिय पूज्य परम मम
नमो नमो देवा
बिनवन तीन कोटि जन
ग्रहन करहु सेवा

[१२]

श्री-भारत शुचि-आरति
जग-मगल-करनी
मंजुल मधुर पद ध्वनि
बुध-जन-मन-हरनी

[१३]

पुनि पुनि प्रेम-समन्वित,
जो कोई गावै
सुलभ, स्वदेश-सहायक,
शुभ मति गति पावै (श्रीधर पाठक)



शुद्धिपत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१०	અ	અ	२०	२०	तभा	तभी
३	१३	र +	र+७	२२	९	जब ही	तब ही
४	३	‘ ”	“ ”	,,	टिप्प०	अभा	अभी
५	१४	स	स ह	२६	३	दह	दही
८	३	अग्रजी	अंग्रेजी	,,	,,	દહી	દહી
,	१३	चढाई	चढाई	३०	१९	का =	को =
९	१	‘ क ’	‘ कू ’	३५	६	जिन्ह	जिन्हों
,	८	अे	ए	,,	८	किन्हींमें	किसी में
,,	१४	ऋ	ऋ	,,	१६	उस को	उसका
१०	टिप्प	‘ज’ ‘ज्’	‘ज’ ‘ज्’	४५	६	આરામ	આરા[illegible]
११	१	याजना	योजना	,,	१०	પરમન	પરમળ
,,	७	तार	तीर	,,	१४	અતર	અત્તર
,,	१२	आ —	ओ —	४६	५	સવા	સુવા
१२	१२	मूर्च्छित	मूर्च्छित	,,	१२	कररो	करो
,,	१७	प्रच्छन	प्रच्छन्न	५७	१६	કરવાનો	કરવાની
१८	७	आहुत	आहुत	६०	७	होती	होगी
१०	७	फत्नम	कत्नम	३९	१८	लड्डु	लड्डू

, एना दाखला माटे जुओ पृष्ठ ६१ नु १८मु वाक्य, ‘લાવવાની’ ના तरजुमो ‘लाना’ ‘लानी’ बन्ने थाय जेम—“મ્હારે રોટની ખાવાની છે=मुझे रोटी खाना (खानी) है’—विशेषणोनी जाति जे छे, ठेकाणे बद लेवी, वस्तुनाम कोई ठेकाणे बहुवचनमां पण अपाय छे.

